हरिभूमि

जींद-कैथल भूमि

रोहतक, रविवार 11 जनवरी 2026

तापमान

अधिकतम 14.0 डिग्री

न्यूनतम 4.0 डिग्री

11 आत्मनिर्भर हरियाणा की नींव स्किल्ड युवाओं से...

11 टीक के उदयवीर ने राष्ट्रीय शूटिंग चैंपियनशिप...

खबर संक्षेप

410 ग्राम चरस के साथ एक चढ़ा पुलिस के हत्थे

जींद। सीआईए स्टाफ सफीदों ने दादी सती रोड पर एक व्यक्ति को काबू कर उसके कब्जे से 410 ग्राम चरस बरामद की है। सदर थाना सफीदों पुलिस आरोपित से पूछताछ कर रही है। सीआईए स्टाफ सफीदों को सूचना मिली थी कि दादी सती रोड पर एक व्यक्ति नशीले पदार्थ बेचने के लिए ग्राहकों को इंतजार कर रहा है। सूचना के आधार पर पुलिस ने कार्रवाई करते काबू कर लिया है।

गाड़ियों के शीशे तोड़कर चोरी का आरोपी दबोचा

कैथल। थाना सिविल लाइन कैथल क्षेत्र अंतर्गत पटेल नगर, सरकारी पशु अस्पताल के नजदीक गली में खड़ी कई गाड़ियों के शीशे तोड़कर बैटरी व गाड़ी से नकदी चोरी करने के मामले में सीआईए-1 पुलिस द्वारा त्वरित कार्रवाई करते हुए एक आरोपी को काबू कर लिया गया। पटेल नगर कैथल निवासी सतीश कुमार की शिकायत अनुसार 7 जनवरी की सुबह पटेल नगर निवासी नागरिकों ने देखा कि गली में खड़ी गाड़ियों के शीशे टूटे हुए हैं।

सोशल मीडिया पर दी अधिवक्ता को धमकी

जींद। सोशल मीडिया पर अधिवक्ता पर अभद्र टिप्पणी करने पर शहर थाना पुलिस ने एक व्यक्ति के खिलाफ आईटी एक्ट, धमकी देने समेत विभिन्न भारतीय न्याय संहिता के तहत मामला दर्ज किया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। अधिवक्ता नरेंद्र अत्री ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि की सैनी मोहल्ला निवासी भारत भूषण ने दस दिसंबर से तीस दिसंबर तक सोशल मीडिया पर उसके खिलाफ अभद्र भाषा का प्रयोग करते टिप्पणी की।

वाटिका से हजारों का सामान चुराया

कैथल। आशीर्वाद वाटिका पाई से चोर हजारों रुपये का सामान चुरा कर ले गए। गांव पाई के जगदीश प्रकाश ने पूंडरी पुलिस को दी शिकायत में बताया कि 2 जनवरी को कर आशीर्वाद वाटिका पाई ने घुसकर वहां पर रख पतीले, ढक्कन, ट्रे, परांत व अन्य सामान चुरा कर ले गए। चहेड कांस्टेबल सुशील कुमार ने बताया कि पुलिस ने मामला दर्ज कर चोरों की तलाश शुरू कर दी है।

मारपीट करने पर तीन के खिलाफ मामला दर्ज

जींद। गांव हरीगढ़ में नहरी नाली तोड़ने का विरोध करने पर महिला के साथ मारपीट करने पर सदर थाना सफीदों पुलिस ने तीन लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। गांव हरिगढ़ निवासी शीला ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि हिसार आयुक्त के आदेश पर उन्हें नहरी पानी नाली मिली हुई है। उनके पड़ोसी कृष्ण परिवार ने नाली को नष्ट कर दिया। जिससे उसकी बिजी गेहूं फसल खराब हो गई।

मारपीट में एक व्यक्ति घायल, शिकायत दर्ज

कैथल। बस स्टैंड तारांवली पर हुई मारपीट में एक व्यक्ति घायल हो गया। उसे अस्पताल में दाखिल करवाया गया है। गांव अगोंद के रघुवीर सिंह ने गुहला पुलिस को दी शिकायत में बताया कि 8 जनवरी को जब वह तारावाली के बस स्टैंड पर खड़ा था तो जसपाल, अमृतपाल, संदीप, मनजीत, सेवा और कश्मीर ने साथियों के साथ मिलकर लाठी और डंडों से मारपीट करते उसे घायल कर दिया। बाद में आरोपी मौके से फरार हो गए।

गांव कालवा से पंचायती बिजली मोटर चोरी

जींद। गांव कालवा से पंचायती बिजली मोटर गायब होने पर पिल्लूखेड़ा थाना पुलिस ने शिकायत के आधार पर चोरी का मामला दर्ज किया है। गांव कालवा के सरपंच सलिंद्र ने पुलिस को दी शिकायत मे बताया कि ग्राम पंचायत द्वारा सबमर्सिबल लगाया हुआ था। बीती रात चारों ने उसकी सात एचपी की मोटर को चोरी कर लिया है।

पोर्टल का कमाल, वैध कॉलोनियां बनी अवैध, शहरवासियों में मचा हड़कंप

नप अधिकारियों ने कहा : लोगों को बिलकुल घबराने की जरूरत नहीं, जांच के बाद सही कर दिया जाएगा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| जींद

सरकार द्वारा एनडीसी पोर्टल पर दिए ब्योरे में शहर की कई वैध कॉलोनियों में बने मकान और प्लाट को अवैध दिखा दिया गया है। जिससे शहरवासियों में हडकंप मच गया है। वहीं अधिकारियों का कहना है कि लोगों को इस बारे में घबराने की जरूरत नही है। जो कालोनियां वैध हैं, उनका गजट नोटिफिकेशन हुआ है, उनको कोई भी अवैध नहीं बता सकता है। जल्द ही सर्वे होगा, उसमें जो त्रुटियां होंगी। वह ठीक हो जाएंगी। बावजूद इसके लोगों में परेशानी बनी हुई है। पिछले सात दशक से ज्यादा समय से जो कालोनियां और मार्केट सरकार ने वैध घोषित कर रखी थी, सरकार के एनडीसी पोर्टल पर अब वह भी अवैध घोषित हो गई हैं। पोर्टल पर इन क्षेत्रों के अवैध घोषित हो जाने के बाद अब यहां की जमीन की रजिस्ट्री भी नहीं हो पाएगी। वर्षों से रह रहे लोग जिन्होंने नगर परिषद से नक्शा पास करवाया है। नियमित रूप से हाउस टैक्स जमा कर रहे हैं। उनके बिजली व पानी के कनेक्शन भी वैध रूप से ले चुके हैं लेकिन अब उनके मकान पोर्टल पर अवैध दिखाई देने से परेशानी बढ़ गई है। इससे लोगों में भ्रम और चिंता की स्थिति भी बनी हुई है। यहां रह रहे लोगों को डर सता रहा है कि इस गलती का असर भविष्य में उनके मकान की रजिस्ट्री, बैंक लोन या अन्य सरकारी सुविधाओं पर न पड़ जाए। एनडीसी पोर्टल पर प्रत्येक कॉलोनी की स्थिति, उसका वैध दर्जा, प्लाटों की संख्या और अन्य बुनियादी जानकारियां उपलब्ध कराई गई हैं ताकि लोगों को अपने मकान और कॉलोनी से जुड़ी स्थिति स्पष्ट रूप से पता चल सके।

जींद। वह मार्केट, जिसे एनडीसी पोर्टल पर अवैध दिखा दिया गया है।

ठीक की जा रही त्रुटियां

नप के कार्यकारी अधिकारी रिषिकेश चौधरी ने कहा कि जो कालोनियां वैध हैं, वह वैध ही हैं। कुछ लोगों की प्रोपर्टी में कुछ करेक्शन हैं, जो ठीक की जा रही हैं। जो कालोनियां वैध हैं, उनका गजट नोटिफिकेशन हुआ है, उनको कोई भी अवैध नहीं बता सकता। किसी को घबराने की कोई जरूरत नहीं है। जल्द ही सर्वे होगा, उसमें जो त्रुटियां होंगी, वह ठीक हो जाएंगी।

पोर्टल पर ये दिखाए अवैध

शहर के माल गोदाम रोड, रेलवे रोड, ज्ञान तारा रोड, मीट मार्केट व दरगाह मार्केट को अवैध दिखाया गया है। दरगाह मार्केट वर्ष 1984 में शुरू हुई थी। वहीं वर्ष 1954 में चल रहे राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के साथ लगती जमीन को भी अवैध दर्शाया गया है। इसके अलावा वर्ष 1995 से पहले की कॉलोनी भी अवैध दिखाई गई है। ऐसे में पोर्टल पर सामने आई कई त्रुटियों ने लोगों की परेशानी बढ़ा दी है। त्रुटियों को ठीक करवाने के लिए नप कार्यालय में शिकायतों की संख्या लगातार बढ़ रही है। नागरिक अपने दस्तावेज, रजिस्ट्री नक्शा पास की प्रतियां और टैक्स रसीदें लेकर अधिकारियों के पास पहुंच रहे हैं लेकिन स्पष्ट समाधान न मिलने से लोगों में नाराजगी भी देखी जा रही है। नप के अनुसार एनडीसी पोर्टल पर डाटा अपलोड किया गया था। इनमें कुछ तकनीकी और अन्य त्रुटियां रह गई हैं। इसलिए आमजन को घबराने की जरूरत नहीं है और जिन मकानों को गलती से अवैध दिखाया गया है उन्हें जांच के बाद सही कर दिया जाएगा।

कैथल। एंटी व्हीकल थेप्ट स्टाफ पुलिस गिरफ्त में लूट मामले के तीनो आरोपी

महिला से जेवर छीनने वाले तीन आरोपी काबू

सोने की बालियां व गले का सोने का ओम छीन लिया था

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कैथल

थाना सिविल लाइन क्षेत्र अंतर्गत एक बुजुर्ग महिला से ई-रिक्शा में लूट की घटना का सफलतापूर्वक खुलासा करते कार्रवाई दौरान एंटी व्हीकल थेफ्ट स्टॉफ द्वारा तीन आरोपियों को काबू कर लिया है। पुलिस प्रवक्ता ने बताया की गांव देवीगढ़ निवासी सुरेश कुमार की शिकायत अनुसार 5 जनवरी उसकी माता सोना देवी (उम्र लगभग 75 वर्ष) खेत-बाड़ा से अपने घर लौट रही थीं। जब वह गांव के सरकारी स्कूल के पास पहुंचीं तो एक अज्ञात व्यक्ति ई-रिक्शा लेकर आया और उन्हें घर छोड़ने का झांसा देकर ई-रिक्शा में बैठा लिया। करीब 200 मीटर आगे चलने के बाद रास्ते में दो अन्य युवक ई-रिक्शा में सवार हो गए। तीनों ने मिलकर बुजुर्ग महिला को इधर-उधर घुमाया और जब महिला ने उतरने की कोशिश की तो ई-रिक्शा नहीं रोका गया। इसी दौरान एक आरोपी ने महिला का मुंह दबा लिया, दूसरे ने टांग पकड़ ली और तीनों ने मिलकर उनके कानों की सोने की बालियां व गले का सोने का ओम छीन लिया।

चाकू दिखा धमकाया

चाकू दिखाकर धमकाने के बाद आरोपियों ने महिला को कुतुबपुर रोड स्थित रेलवे फाटक के पास ई-रिक्शा से धक्का देकर नीचे फेंक दिया। जिस बारे थाना सिविल लाइन में मामला दर्ज किया गया था। एसपी उपासना द्वारा एंटी व्हीकल थेफ्ट स्टॉफ को जल्द से जल्द आरोपियों का पता लगाकर काबू करने के आदेश दिए गए थे। आदेशों पर खरा उतरते एंटी व्हीकल थेफ्ट स्टॉफ प्रभारी एसआई प्रदीप कुमार की अगुवाई में एसआई जयभगवान की टीम ने आरोपी सुभाष नगर कैथल निवासी रविंद्र, सीवन निवासी अजय व आशु को काबू कर लिया गया। पूछताछ दौरान खुलासा हुआ की आरोपियों ने उक्त लुटे गए सोने के आभूषण सीवन की एक प्राइवेट बैंक में जमा करवा दिए थे। बैंक को नोटिस दिया गया है,

दो माह से नागरिक अस्पताल में चल रहा रेनोवेशन का काम

डिप्टी स्पीकर के निर्देश भी नहीं खुलवा पाए अस्पताल में शौचालयों से ताले

पिछले दिनों शौचालयों को लेकर लगाई थी निर्माण ठेकेदार की क्लास

अस्पताल से टॉयलेट वैन गायब, मरीजों को हो रही परेशानी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| जींद

जिला मुख्यालय स्थित नागरिक अस्पताल में शौचालयों को लेकर समस्या हरियाणा विधानसभा के डिप्टी स्पीकर डा. कृष्ण मिड्ढा के निर्देशों के बाद भी दूर नही हो पाई है। गत आठ दिसंबर को अस्पताल में चल रहे जीर्णोद्धार के कार्य के निरीक्षण के लिए हरियाणा विधानसभा के डिप्टी स्पीकर डा. कृष्ण मिड्ढा पहुंचे थे। उन्होंने शौचालयों को लेकर आ रही परेशानी को लेकर जायजा लिया था और ठेकेदार की क्लास तक लगाई थी। बाकायदा डिप्टी स्पीकर ने सीएमओ व निर्माण ठेकेदारों से जवाब-तलबी भी की थी। डिप्टी स्पीकर ने तुरंत प्रभाव से निर्देश दिए कि जल्द से जल्द निर्माण कार्य को पूरा कर शौचालयों को दुरूस्त करवाया जाए। डिप्टी स्पीकर के निर्देश पर टॉयलट वैन को तुरंत प्रभाव से खड़ा करवा दिया गया था ताकि मरीजों को किसी तरह की परेशानी न आए। अब न तो अस्पताल में कहीं टॉयलेट वैन है और न ही आज तक भी पुरानी बिल्डिंग में स्थित शौचालय शुरू हो पाए हैं। नागरिक अस्पताल की बिल्डिंग का 14.91 करोड़ से लगभग साढ़े तीन माह पहले जीर्णोद्धार कार्य शुरू हुआ था। तब यह कहा गया था कि लगभग डेढ़ माह में ही इस कार्य को पूरा कर लिया जाएगा लेकिन समय अवधि बढ़ती गई और अस्पताल में आने वाले मरीजों, स्वास्थ्यकर्मियों की परेशानी भी बढ़ती चली गई। यहां सबसे जरूरी महिलाओं व पुरूषों के लिए शौचालयों का रेनोवेशन का कार्य एकसाथ शुरू कर दिया गया। इस बारे में किसी ने नही सोचा कि शौचालय रेनोवेशन के दौरान यहां आने वाले मरीजों व तिमारदारों को शौचालय का अस्थायी प्रबंध किया जाए। जैसे-तैसे लोगों ने समस्या को झेला और इसकी शिकायत उच्च अधिकारियों तक पहुंची थी। हरियाणा विधानसभा के डिप्टी स्पीकर डा. कृष्ण मिड्ढा ने गत आठ दिसंबर को पुरानी बिल्डिंग का निरीक्षण किया और वह सबसे पहले शौचालय में गए और जांच की। यहां निर्माण ठेकेदार की क्लास लगाई और निर्देश दिए कि जब तक टॉयलेट का निर्माण कार्य पूरा नही होता है तब तक टॉयलेट वैन का प्रबंध किया जाए। इसके अलावा जल्द से जल्द इन शौचालयों के रेनोवेशन को पूरा कर इसे शुरू कर दिया जाए। बाकायदा मौके पर मौजूद रहे पीडब्ल्यूडी विभाग के एक्सईन, एसडीओ व ठेकेदार को लताड़ लगाई और सभी जगह पर चले काम को जल्द पूरा करने के निर्देश दिए।

गत आठ दिसंबर को अस्पताल का निरीक्षण करते डिप्टी स्पीकर डा. कृष्ण मिड्ढा।

मरीज भटकने को मजबूर

हरियाणा विधानसभा के डिप्टी स्पीकर के दिशा-निर्देश और लताड़ का किसी पर कोई फर्क नही पड़ा। आजतक न तो शौचालय का रेनोवेशन कार्य पूरा हो पाया और न ही शौचालय पर से ताले खुल पाए। इसके अलावा दस से 15 दिन तो टॉयलेट वैन अस्पताल में मौजूद रही। अब वो भी गायब हो चुकी है। ऐसे में स्वतः अंदाजा लगाया जा सकता है कि अस्पताल में आने वाली महिलाओं व पुरूषों को कितनी परेशानी उठानी पड़ रही है। असपताल आए लोगों का कहना है कि सरकार करोड़ों रुपये बिल्डिंग के जीर्णोद्धार पर लगा रही है लेकिन लेकिन बुनियादी सुविधाओं जैसे शौचालयों की सुविधा उपलब्ध नही करवा पाई है। एक मरीज के परिजन ने बताया कि डिप्टी स्पीकर ने तो ठेकेदार को डांटा था लेकिन यहां कुछ नही बदला। ताले वैसे के वैसे लटके हुए हैं और टॉयलेट वैन गायब है। मरीज क्या करें, कहां जाएं।

अधिकारियों से की जाएगी जवाब-तलबी

हरियाणा विधानसभा के डिप्टी स्पीकर डा. कृष्ण मिड्ढा ने कहा कि अस्पताल में अस्थायी शौचालयों की व्यवस्था करवाई गई थी। फिलहाल वो प्रदेश से बाहर हैं। आने के तुरंत बाद इस पर कार्रवाई की जाएगी। आठ दिसंबर को ठेकेदार, स्वास्थ्य विभाग व पीडब्ल्यूडी अधिकारियों को शौचालयों की व्यवस्था करने के निर्देश दिए थे। अगर अबतक नही हुई है तो जवाब-तलबी की जाएगी।

शौचालय शुरू करवाने के लिए कहेंगे

नागरिक अस्पताल के प्रधान चिकित्सा अधिकारी डा. रघुवीर पूनिया ने बताया कि उन्होंने संबंधित निर्माण ठेकेदार को कई बार शौचालय रेनोवेशन कार्य को पूरा कर इसे आमजन के लिए शुरू करने के लिए कहा है। अबतक भी शौचालय पर ताले हैं। वो फिर से निर्माण विभाग, ठेकेदार को इस बारे में बोलेंगे। उनका प्रयास है कि जल्द से जल्द शौचालय आमजन के लिए खोल दिए जाएं। नगर परिषद से यहां अस्थायी शौचालय वैन को खड़ा करने के लिए लिखा जाएगा।

जलनिकासी न होने के कारण राहगीर परेशान

राजौंद। नगर के पशु अस्पताल को जाने वाली गली में पानी की निकासी न होने के कारण लोगों को बड़ी परेशानी आ रही है। आलम यह है कि सर्दी के मौसम में हर समय गली में पानी भरा रहने से घरों से निकलना भी मुश्किल होकर रह गया है। राजेश ने बताया कि इसको लेकर कई बार बाहर प्रशासन को अवगत करवा चुके हैं लेकिन न तो नालियों की सफाई की जा रही है और न ही पानी की निकासी ही की जा रही है। घरों से निकलने वाला सारा पानी यही गली में भरा रहता है। जिससे उनका घर से निकलना भी मुश्किल होकर रह गया है। आलम यह है कि पानी से जब दुर्गंध आती है तो घर में बैठना भी मुश्किल हो जाता है दूसरा यहां से पानी ज्यादा होने पर गली से निकलना भी मुश्किल हो जाता है। उसने प्रशासन से मांग की है कि पानी निकासी की उचित व्यवस्था की जाए।

अनूपगढ़ में संदिग्ध हालात में महिला ने लगाया फंदा

शिकायत के आधार पर छह पर दहेज-हत्या का मामला दर्ज

हरिभूमि न्यूज ▶▶| जींद

गांव अनूपगढ़ में संदिग्ध हालात में महिला ने फांसी का फंदा लगा कर आत्महत्या कर ली। मायका पक्ष ने आरोप लगाया कि दहेज की डिमांड पूरी न होने से महिला आत्महत्या के मजबूर हुई है। सदर थाना पुलिस ने शिकायत के आधार पर पति समेत छह लोगों के खिलाफ दहेज हत्या मामला दर्ज किया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। गांव अनूपगढ़ निवासी प्रदीप की पत्नी पूनम (30) ने शनिवार को सुबह संदिग्ध हालात में अपने घर मे फांसी का फंदा लगा लिया। जिसे फंदे से उतार कर नागरिक अस्पताल लाया गया। जहां पर चिकित्सकों ने पूनम को मृत घोषित कर दिया। घटना की सूचना पाकर सदर थाना पुलिस तथा मायका पक्ष मौके पर पहुंच गई और हालातों का जायजा लिया। मृतका के भाई गांव खांडा निवासी सुनील ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि उसकी बहन पूनम की शादी चार साल पहले प्रदीप के साथ हुई थी। शादी के बाद से ही ससुरालीजन पूनम को दहेज के लिए तंग कर रहे थे। इसी बीच पूनम ने लड़के को भी जन्म दिया। बावजूद इसके दहेज को लेकर पूनम का उत्पीड़न जारी रहा। जिसको लेकर पंचायत भी हुई। आरोप लगाया कि ससुरालीजनों को से परेशान हो पूनम ने कदम उठाया है। सदर थाना पुलिस ने मृतका के भाई की शिकायत पर पति प्रदीप, सास संतरो, जेठ काला, जेठानी मीना, बिल्लू तथा उसकी पत्नी पूजा के खिलाफ दहेज हत्या का केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

जींद। मृतका के शव का पोस्टमार्टम करवाने आए परिजन।

मामले की जांच जारी

सदर थाना के जांच अधिकारी भगवत दयाल ने बताया कि मृतका के भाई ने आरोप लगाते हुए शिकायत दी थी। फिलहाल छह लोगों के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया गया है। मामले की जांच की जा रही है।

कलायत। केमिस्ट एसोसिएशन की आपात बैठक में उपस्थित पदाधिकारी व सदस्य।

आरोपितों पर जल्द कार्रवाई की मांग उठाई

कलायत। केमिस्ट संचालक अमित गुप्ता पर एक महिला सहित तीन लोगों द्वारा लाठियों से हमला कर 85 हजार की लूट किए जाने का मामला अब तूल पकड़ता जा रहा है। इस गंभीर आपराधिक घटना को लेकर केमिस्ट संचालकों में भारी रोष व्याप्त है। मामले में ठोस कार्रवाई की मांग को लेकर शनिवार को केमिस्ट एसो की आपात बैठक आयोजित की। जिसमें क्षेत्र के अनेक केमिस्ट संचालक और संगठन पदाधिकारी उपस्थित रहे। इसकी रहनुमाई संगठन प्रधान आनंद शर्मा ने की। उन्होंने कहा कि घटना को कई दिन बीत जाने के बावजूद पुलिस अभी तक हमलावरों का कोई ठोस सुराग लगाने में विफल रही है। इससे न केवल केमिस्ट संचालकों में भय का माहौल है। बल्कि आम नागरिकों में भी असुरक्षा की भावना बढ़ती जा रही है। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि यदि जल्द ही आरोपियों की गिरफ्तारी नहीं होती है, तो संगठन को मजबूरन आंदोलनात्मक कदम उठाने पड़ेंगे।आनंद शर्मा ने कहा कि कलायत क्षेत्र में पिछले कुछ समय से चोरी, लूट और हमले जैसी घटनाओं में लगातार बढ़ोतरी हो रही है। अपराधियों के हौसले इस कदर बुलंद हैं कि वे अब दिनदहाड़े वारदातों को अंजाम दे रहे हैं।

सूर्य भगवान के मकर राशि में प्रवेश करने पर मनाया जाता है पर्व, देश में विशेष महत्व

23 साल बाद मकर संक्रांति व पिट्तला एकादशी एक साथ, बन रहा पुण्यकारक व लाभदायक संयोग

देश की संस्कृति व सभ्यता को उजागर करता है पर्व

हरिभूमि न्यूज ▶▶| उचाना

महाराजा अग्रसेन मंदिर उचाना मंडी पुजारी अशोक शर्मा ने कहा कि पर्व एवं त्योहार प्रत्येक देश की संस्कृति तथा सभ्यता को उजागर करते है। यहां पर्व, त्योहार और उत्सव सभी प्रदेशों में अलग-अलग ढंग से मनाए जाते हैं। मकर संक्रांति का पर्व हमारे देश में विशेष महत्व रखता है। सूर्य भगवान जब धनु राशि को छोड़कर मकर राशि में प्रवेश करते हैं तब इस पर्व को मकर संक्रति पर्व कहा गया है। 14 जनवरी को दोपहर बाद 3 बजकर 06 मिनट पर सूर्यनारायण मकर राशि में प्रवेश करेंगे। इस क्रांति का पुण्यकाल 14 जनवरी को प्रातः सूर्योदय के साथ ही प्रारंभ हो जाएगा। पुजारी ने कहा कि इस बार मकर संक्रांति पर विशेष योग बन रहे है। मकर संक्रांति व पिट्तला एकादशी का यह संयोग अबकी बार 23 वर्ष बाद होने जा रहा है। अमृत सिद्धि योग, सर्वार्थ सिद्धि योग, सौभाग्य योग इन तीनों योगों का संयोग भी बहुत ही पुण्यकारक व लाभदायक है। ये सभी योग पर्व की महिमा को बढ़ा देते हैं। इस दिन किए गए जप, दान स्नान व अन्य पुण्य कर्म का फल हजारों गुना बढ़ जाता है। लोहड़ी का पर्व 13 जनवरी को मकर संक्रांति से ठीक एक दिन पहले मनाया जाता है। जिसके घर में संतान हुई हो या शादी के बाद पहली लोहड़ी हो, फिर तो बड़े ही खुशियों के साथ इस पर्व को मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि कहते हैं इस दिन लोहिता नाम की राक्षसी को भगवान श्री कृष्ण ने गति प्रदान की थी। शाम के समय में अग्नि प्रज्वलित की जाती है। इस दिन से रातें छोटी होने लगती हैं और दिन बड़े होने लग जाते हैं। यह पर्व नकारात्मक ऊर्जा को समाप्त करने व सकारात्मक ऊर्जा को बढ़ाने का प्रतीक है। आपसी भाईचारे व सौहार्द का प्रतीक है। लोहड़ी पर्व कठोर सर्दी खत्म होने व बसंत के आगमन का संकेत करता है।

जींद। पुजारी अशोक शर्मा।

कंबल, तिल, मूंगफली, घी, लकड़ी का करें दान

मकर संक्रांति के दिन गंगा आदि पवित्र नदियों में विशेषकर प्रयाग (संगम) में स्नान करने का विशेष महत्व बताया गया है। संक्रांति पर्व पर दान करना बहुत शुभ माना गया है। कंबल, तिल, मूंगफली, घी, लकड़ी आदि का दान करने से पुण्य की प्राप्ति होती है तथा सूर्यादि नवग्रह अनुकूल होने लगते हैं, शुभ फल प्रदान करते हैं।

प्रो. राजेंद्र कुमार अनायत ने संभाला वीसी का कार्यभार

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कैथल

हरियाणा के उच्च शिक्षा जगत में आज एक नए अध्याय की शुरुआत हुई, जब प्रख्यात शिक्षाविद, अंतरराष्ट्रीय शोधकर्ता और अनुभवी प्रशासक प्रो. राजेंद्र कुमार अनायत ने महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विवि, कैथल के पांचवें नियमित कुलगुरु के रूप में पदभार ग्रहण किया। हरियाणा राज्यपाल एवं कुलाधिपति द्वारा उनकी नियुक्ति, विवि को वैश्विक पहचान दिलाने की दिशा में एक बड़ा कदम मानी जा रही है। शनिवार प्रातः 11:00 डॉ भीमराव अंबेडकर महाविद्यालय परिसर स्थित विवि कार्यालय में प्रो. अनायत का आगमन हुआ। उनका स्वागत विवि की प्राचीन परंपराओं के अनुसार किया। वेदपाठी आचार्यों ने स्वस्तिवाचन के साथ उन्हें कुलपति कक्ष तक पहुँचाया। कुलसचिव प्रो. संजय गोयल, प्रो. भाग सिंह बोदला और डॉ. जगत नारायण ने पुष्पगुच्छ भेंट कर विवि परिवार की ओर से उनका अभिनंदन किया। स्पष्ट किया कि लक्ष्य विवि को केवल भाषा तक सीमित रखना नहीं है, अपितु प्राचीन ज्ञान का डिजिटलीकरण और संस्कृत के वैज्ञानिक सूत्रों को आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी के साथ जोड़ना होगा।

सिबिल स्कोर अच्छा होने के बावजूद क्रेडिट कार्ड क्यों हो जाता है रिजेक्ट

सुझाव | बिजनेस डेस्क

आज के समय में क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल जीवन का एक अहम हिस्सा बन चुका है। लोग ऑनलाइन शॉपिंग, बिल पेमेंट, ट्रैवल और कैशलेस ट्रांजेक्शन के लिए क्रेडिट कार्ड का सहारा लेते हैं। आम धारणा यह है कि अगर आपका सिबिल स्कोर अच्छा है तो बैंक आसानी से आपका क्रेडिट कार्ड अप्रूव कर देगा, लेकिन वित्तीय विशेषज्ञों का कहना है कि ऐसा हमेशा जरूरी नहीं है। कई बार सिबिल स्कोर मजबूत होने के बावजूद भी बैंक क्रेडिट कार्ड रिजेक्ट कर देते हैं।

कार्ड की कैटेगरी व इनकम का मेल जरूरी

जानकारों का कहना है कि क्रेडिट कार्ड रिजेक्शन का सबसे बड़ा कारण कार्ड की कैटेगरी और आवेदक की इनकम होती है। उन्होंने कहा, "जिस क्रेडिट कार्ड के लिए आप आवेदन कर रहे हैं, क्या आपकी सैलरी उस कार्ड के लिए तय मानकों के अनुरूप है?" कई बार लोग प्रीमियम या हाई-कैटेगरी कार्ड के लिए आवेदन कर देते हैं, जबकि उनकी इनकम उस स्तर के कार्ड के लिए पर्याप्त नहीं होती। ऐसे मामलों में बैंक अप्रूवल देने से बचता है।

नौकरी की स्थिरता की अहम भूमिका

क्रेडिट कार्ड अप्रूवल में नौकरी की प्रकृति भी महत्वपूर्ण होती है। स्थायी नौकरी करने वाले कर्मचारियों को बैंक अपेक्षाकृत सुरक्षित मानते हैं। वहीं, कॉन्ट्रैक्ट या अस्थायी नौकरी करने वालों के प्रोफाइल को बैंक ज्यादा जोखिम भरा मान सकते हैं, जिससे कार्ड रिजेक्ट होने की संभावना बढ़ती है।

बार-बार आवेदन नुकसानदेह

कम समय में कई बैंकों से क्रेडिट कार्ड के लिए आवेदन करना भी नेगेटिव सिग्नल माना जाता है। बार-बार आवेदन करने से क्रेडिट प्रोफाइल प्रभावित होती है और बैंक इसे वित्तीय दबाव का संकेत मान सकते हैं।

मौजूदा लोन व ईएमआई भी देखता है बैंक

अगर किसी व्यक्ति पर पहले से कई लोन या भारी ईएमआई का बोझ है, तो बैंक नए क्रेडिट कार्ड के लिए मंजूरी देने में हिचकिचाता है। बैंक यह सुनिश्चित करना चाहता है कि ग्राहक की आय और खर्चों में संतुलन बना हुआ हो।

खाते वाले बैंक से कार्ड लेना फायदेमंद

विशेषज्ञों की सलाह है कि क्रेडिट कार्ड के लिए सबसे पहले अपने मौजूदा बैंक को प्राथमिकता दें। जिस बैंक में आपका सेविंग अकाउंट है, वह आपके ट्रांजैक्शन पैटर्न और फाइनेंशियल बिहेवियर को बेहतर तरीके से समझता है, जिससे अप्रूवल के चांस बढ़ जाते हैं।

कम क्रेडिट कार्ड, ज्यादा भरोसेमंद प्रोफाइल

- अंत में विशेषज्ञों का कहना है कि एक व्यक्ति को एक या दो क्रेडिट कार्ड तक ही सीमित रहना चाहिए।
- ज्यादा क्रेडिट कार्ड होने पर बैंक आपके प्रोफाइल को जोखिम भरा मान सकता है, जिससे नए आवेदन रिजेक्ट होने की आशंका बढ़ जाती है।

क्या है सिबिल स्कोर

सिबिल स्कोर एक 3-डिजिट का नंबर होता है जो आपकी क्रेडिट हिस्ट्री को दर्शाता है। यह नंबर 300 से 900 के बीच होता है, और यह आपकी क्रेडिटवर्थीनेस को मापता है। सिबिल स्कोर आपके लायन, क्रेडिट कार्ड, और अन्य क्रेडिट प्रोडक्ट्स के भुगतान इतिहास, क्रेडिट उपयोग, और अन्य कारकों के आधार पर गणना किया जाता है।

सिबिल स्कोर के फायदे

- लायन और क्रेडिट कार्ड के लिए आवेदन करने में मदद करता है
- कम ब्याज दर पर लायन प्राप्त करने में मदद करता है
- क्रेडिटवर्थीनेस को बढ़ाता है
- वित्तीय योजना बनाने में मदद करता है

सिबिल स्कोर को कैसे बढ़ाएं

- समय पर भुगतान करें
- क्रेडिट उपयोग को कम रखें
- क्रेडिट रिपोर्ट में गलतियों को सुधारें
- नए क्रेडिट अकाउंट न खोलें
- क्रेडिट हिस्ट्री को लंबा रखें

निवेशक सोने और चांदी की तरफ कर रहे रुख, पोर्टफोलियो में बनाएं विविधता

अस्थिरता के दौर में गोल्ड या सिल्वर ईटीएफ?

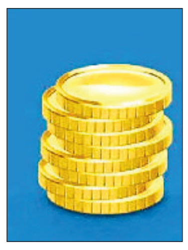

निवेश मंत्रा | बिजनेस डेस्क

- पोर्टफोलियो में थोड़ी मात्रा में चांदी जोड़कर विविधता लाएं

> सोना और चांदी दोनों की कीमतें डॉलर में तय होती हैं, इसलिए उनकी वैल्यू डॉलर की मजबूती पर निर्भर करती है। मजबूत डॉलर धातुओं को अंतरराष्ट्रीय खरीदारों के लिए महंगा कर देता है, जिससे मांग घट सकती है, जबकि कमजोर डॉलर का प्रभाव उलटा होता है। हालांकि कुछ मैक्रो परिस्थितियों जैसे उच्च मुद्रास्फीति के समय, डॉलर और सोना दोनों एक साथ भी बढ़ सकते हैं।

अमेरिका–वेनेजुएला संघर्ष और बढ़ती भू-राजनीतिक अनिश्चितता के बीच, निवेशक तेजी से सोना और चांदी जैसे पारंपरिक सुरक्षित निवेश विकल्पों की ओर रुख कर रहे हैं। म्यूचुअल फंड निवेशकों के लिए मुख्य सवाल अब यह है कि क्या उन्हें गोल्ड ईटीएफ, सिल्वर ईटीएफ या दोनों का मिश्रण चुनना चाहिए? बाजार विशेषज्ञों का कहना है कि मौजूदा भू-राजनीतिक तनाव के दौरान पोर्टफोलियो में गोल्ड ईटीएफ की भूमिका अधिक होनी चाहिए। क्योंकि सोना अधिक स्थिरता प्रदान करता है और एक भरोसेमंद हेज का काम करता है। सिल्वर ईटीएफ को कम अनुपात में रखा जा सकता है क्योंकि इनमें अधिक उतार-चढ़ाव होता है और इनकी मांग काफी हद तक औद्योगिक उपयोग पर निर्भर है।

मौजूदा समय में पोर्टफोलियो में गोल्ड ईटीएफ की भूमिका अधिक होनी चाहिए
■
सोना अधिक स्थिरता प्रदान करता है और एक भरोसेमंद हेज का काम करता है
■
निवेशक ध्यान रखें कोई भी एसेट क्लास हर समय नहीं जीतता

अलग-अलग भूमिका है दोनों धातुओं की

दोनों धातुएं पारंपरिक रूप से अलग-अलग भूमिकाएं निभाती हैं। पोर्टफोलियो पोजिशनिंग के दृष्टिकोण से अधिकांश निवेशकों को दोनों में संतुलित निवेश रखना चाहिए। सोना प्राथमिक सुरक्षित-निवेश एंकर बना रहना चाहिए, जबकि चांदी पूरक भूमिका निभाते हुए कुछ चरणों में अधिक रिटर्न दे सकती है। निवेशक यह कभी न भूलें कि कोई भी एसेट क्लास हर समय नहीं जीतता। इसलिए इक्विटी और डेट सहित मल्टी-एसेट पोर्टफोलियो बनाना जरूरी है।

नए निवेशक क्या करें?

इस सप्ताह सोना और चांदी मजबूत बढ़त के साथ खुले और बढ़ते भू-राजनीतिक तनावों के बीच एक सप्ताह के उच्चतम स्तर पर पहुंच गए। अनिश्चितता के इस दौर में यह सवाल भी उभरता है कि पहली बार निवेश करने वालों के लिए फोकस कहां होना चाहिए? ऐतिहासिक रूप से भू-राजनीतिक तनाव के समय सोना मजबूत सुरक्षित-निवेश माना गया है और केंद्रीय बैंकों की अधिक भागीदारी, व्यापक वैश्विक स्वीकार्यता और गहरी लिक्विडिटी के कारण सोना आमतौर पर संकट के समय बेहतर प्रदर्शन करता है। पहली बार निवेश करने वालों को सोने के ईटीएफ में मुख्य सुरक्षित-निवेश करना चाहिए, लेकिन पोर्टफोलियो में थोड़ी मात्रा में चांदी भी जोड़कर विविधता लाई जा सकती है।

मुद्रा विनिमय दर का भी होता है असर

मुद्रा विनिमय दरों का उतार-चढ़ाव भी सोना और चांदी ईटीएफ से मिलने वाले रिटर्न को प्रभावित करता है। सोना एक कीमती धातु के रूप में, आम तौर पर डॉलर और ब्याज दरों में बदलाव के प्रति अधिक संवेदनशील होता है, जबकि चांदी मुद्रा उतार-चढ़ाव के अलावा वैश्विक वृद्धि की उम्मीदों पर भी प्रतिक्रिया करती है। अमेरिका–वेनेजुएला संघर्ष ने तेल की कीमतों और मुद्रास्फीति को लेकर चिंताएं भी बढ़ा दी हैं। बढ़ती तेल कीमतें मुद्रास्फीति को ऊपर धकेल सकती हैं, जिससे आम तौर पर कीमती धातुओं को समर्थन मिलता है क्योंकि निवेशक बढ़ती लागत के खिलाफ हेज की तलाश करते हैं।

डॉलर की कीमत कैसे करेगी प्रभावित?

वेनेजुएला ऑपरेशन के बाद दिए गए बयान में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि अब हम वेनेजुएला को चलाने जा रहे हैं। ट्रंप ने यह भी कहा कि अमेरिका अन्य देशों को वेनेजुएला का काफी तेल बेचेगा।इन हालात में निवेशकों के लिए महत्वपूर्ण सवाल यह भी है कि डॉलर की मजबूती और मुद्रा-विनिमय उतार-चढ़ाव सोना और चांदी की कीमतों को कैसे प्रभावित करते हैं? असल में सोना और चांदी दोनों ही आम तौर पर डॉलर के विपरीत दिशा में चलते हैं। मजबूत डॉलर कीमतों पर दबाव डालता है, जबकि कमजोर डॉलर उन्हें सपोर्ट करता है। सोना मुद्रा और ब्याज-दर के उतार-चढ़ाव के प्रति अधिक संवेदनशील है, जबकि चांदी पर आर्थिक और औद्योगिक गतिविधि का भी प्रभाव होता है।सोना और चांदी दोनों की कीमतें डॉलर में तय होती हैं, इसलिए उनकी वैल्यू डॉलर की मजबूती पर निर्भर करती है। मजबूत डॉलर धातुओं को अंतरराष्ट्रीय खरीदारों के लिए महंगा कर देता है, जिससे मांग घट सकती है, जबकि कमजोर डॉलर का प्रभाव उलटा होता है। हालांकि कुछ मैक्रो परिस्थितियों जैसे उच्च मुद्रास्फीति के समय, डॉलर और सोना दोनों एक साथ भी बढ़ सकते हैं। इसके अलावा, चांदी के औद्योगिक उपयोग के कारण कमजोर डॉलर अक्सर इस कीमती धातु में तेज बढ़त को ट्रिगर करता है क्योंकि विदेशी विनिर्माण मांग बढ़ जाती है।

आक्रामक रणनीति नहीं रीबैलेंसिंग करें

एक सवाल यह भी है कि निवेशकों के लिए मौजूदा परिस्थिति में क्या यह समय एक्सपोजर बढ़ाने का है या सिर्फ मौजूदा गोल्ड और सिल्वर ईटीएफ पोर्टफोलियो को रीबैलेंस करने का? दूसरी बात क्या बढ़ती मुद्रास्फीति या तेल कीमतें गोल्ड बनाम सिल्वर के दृष्टिकोण को प्रभावित कर सकती हैं? ऐसे में मल्टी-एसेट पोर्टफोलियो बनाना जरूरी है, क्योंकि कोई भी एसेट हमेशा नहीं जीतता। इसके बावजूद मौजूदा परिस्थितियों को देखते हुए कीमती धातुएं अब भी पोर्टफोलियो की सुरक्षा और विविधता के लिए आकर्षक विकल्प हैं। साथ ही निवेशक आक्रामक रूप से एक्सपोजर बढ़ाने के बजाय मौजूदा होल्डिंग्स को रीबैलेंस करें और बढ़ती मुद्रास्फीति और तेल कीमतें आम तौर पर सोने को समर्थन देती ही हैं।

नए साल में करें नई शुरुआत कुछ बातों पर रखें फोकस शेयर बाजार और म्यूचुअल फंड तेजी से लोकप्रिय हो रहे

निवेश, बचत और वेल्थ बनाने के लिए तैयार करें बेहतर रणनीति

जानकारी | बिजनेस डेस्क

> आज के समय में स्वास्थ्य का खर्च इतना ज्यादा हो गया है कि अगर आपको या परिवार के किसी सदस्य को अस्पताल में भर्ती होना पड़ जाए तो आपकी अच्छी खासी बचाई गई रकम इलाज और अस्पताल का बिल भरने में खर्च हो सकती है। इससे आपके निवेश की योजना और निवेश के लक्ष्यों के लिए कदम आगे बढ़ा पाना बेहद मुश्किल हो जाएगा।

नए साल पर सभी कुछ न कुछ संकल्प लेते हैं। इसलिए निवेश के क्षेत्र में भी यह समय कुछ न कुछ बेहतर रणनीति बनाने का है। नया साल 2026 शुरू हो गया है। कमाई, बचत और निवेश को लेकर भी नए साल में कुछ न कुछ रिजॉल्यूशन जरूर लें। नए निवेशक जहां नई शुरुआत के लिए विकल्प और तरीकों पर बात करेंगे, वहीं जो लोग पहले से निवेश कर रहे हैं, वो कुछ न कुछ बदलाव या डायवर्सिफिकेशन के बारे में सोच रहे होंगे। हर कोई अपनी-अपनी समझ और तरीकों से अपनी फाइनेंशल प्लानिंग बनाता और उस पर आगे बढ़ता है। निवेश के तेजी से उभरते विकल्पों की बात करें तो शेयर बाजार और म्यूचुअल फंड तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। नए साल की नई शुरुआत के बीच एक्सपर्ट के नजरिए से समझते हैं कि निवेशक को 2026 में किन बातों पर फोकस करना चाहिए, जिससे कि कमाई, बचत और निवेश का संतुलन बना रहे, वेल्थ बनता रहे और फाइनेंशियल लक्ष्यों को हासिल करना आसान रहे।

जीवन बीमा व स्वास्थ्य बीमा लिया है?

निवेश की शुरुआत करने से पहले यह सुनिश्चित कर लेना बेहद जरूरी है कि क्या आपने पर्याप्त जीवन बीमा और स्वास्थ्य बीमा कवर लिया है या नहीं? अगर नहीं है या पर्याप्त नहीं है, तो 2026 में सबसे पहले आप ये दोनों कवर जरूर करा लें। जीवन बीमा आपके परिवार और आप पर निर्भर लोगों को उस समय आर्थिक मदद करता है, जब कोई अनहोनी होती है। इसी तरह, पर्याप्त स्वास्थ्य बीमा भी रखना जरूरी है।

क्या फाइनेंशियल लक्ष्यों की समीक्षा की

नए साल में सबसे अहम बात कि अपने फाइनेंशियल लक्ष्यों की समीक्षा करें। ऐसा इसलिए जरूरी है कि हर साल बाजार में उठापटक, रिस्क प्रोफाइल, इनकम और खर्चों में उतार-चढ़ाव है। ऐसे में इस बात का आकलन करना अहम हो जाता कि क्या आपने निवेश के जिन एसेट क्लास में पैसा लगाया है, उनकी परफार्मेंस कैसी चल रही है, जोखिम उठाने की क्षमता कम-ज्यादा हुई है या फिर आपके फाइनेंशियल लक्ष्य हासिल करने को लेकर कैसा संकेत है?

मार्केट साइकिल समझना क्यों जरूरी?

नए साल के साथ हमेशा यह भी ध्यान रखना चाहिए कि बाजार में निवेश का साइकिल कैसा भी हो आपको धैर्य रखना चाहिए। मार्केट साइकिल में उतार-चढ़ाव आना स्वाभाविक बात है। कभी बाजार तेजी में होता है तो कभी मंदी में, लेकिन ऐसे समय में निवेश बनाए रखना सबसे जरूरी होता है। घबराकर निवेश निकालने से नुकसान होने की आशंका बढ़ जाती है।

धैर्य रखें, लाभ जरूर मिलेगा

ऐसे में अगर पर धैर्य रखते हैं और लंबे समय तक निवेश में बने रहते हैं, उन्हें बाजार के पूरे साइकिल का लाभ भी आपको मिलेगा। नियमित निवेश, जैसे एसआईपी, बाजार की गिरावट में भी औसत लागत कम करने में मदद करता है। मार्केट साइकिल का इतिहास बताता है कि यह समय के साथ संभलता है और नया हाई बनाता है। इसलिए शॉर्ट टर्म उतार-चढ़ाव में पैनिक होने की बजाय लंबी अवधि के लक्ष्यों को हासिल करने पर फोकस करना चहिए।

एसआईपी शुरू करें या निवेश बढ़ाएं

कहा जाता है कि नई शुरुआत करने से ही नए मौके बनते हैं। इसलिए अगर म्युचुअल फंड में निवेश करना चाहते हैं, तो सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेट प्लान (एसआईपी) के जरिए निवेश शुरू कर सकते हैं। वहीं अगर पहले से निवेश कर रहे हैं तो एसआईपी की राशि बढ़ा सकते हैं। एसआईपी शुरू करना या मौजूदा निवेश को बढ़ाना दोनों ही समझदारी भरे फैसले हो सकते हैं। एसआईपी के जरिए नियमित निवेश करने से बाजार की गिरावट का फायदा मिलता है और औसत लागत कम होती है। वहीं, जिन निवेशकों की कमाई स्थिर है और वे अपने लक्ष्यों को लेकर स्पष्ट हैं, वे अपने निवेश की राशि बढ़ाकर लंबे समय में बेहतर रिटर्न पा सकते हैं। निवेश हमेशा जोखिम उठाने की क्षमता और समय सीमा के अनुसार करना जरूरी है।

लोन चुकाने के लिए न निकालें ईपीएफ से पैसा हो सकता है नुकसान

बिजनेस डेस्क

बिजनेस डेस्क। कई सैलरीड लोगों के लिए ईपीएफ (कर्मचारी भविष्य निधि) की बचत से लोन चुकाना बहुत लुभावना लगता है। लोग सोचते हैं कि इससे बड़ा लोन खत्म, हर महीने का तनाव कम और जीवन कर्जमुक्त हो जाता है। लेकिन पर्सनल फाइनेंस एक्सपर्ट चेतावनी देते हैं कि खासकर होम लोन चुकाने के लिए ईपीएफ की रकम निकालना लंबे समय में काफी महंगा पड़ सकता है, जिसे ज्यादातर लोग नजरअंदाज कर देते हैं।

ईपीएफ है रिटायरमेंट का सहारा

ईपीएफ को रिटायरमेंट के लिए बनाया गया है। ये एक मजबूरी वाला लंबे समय का निवेश है। कर्मचारी और कंपनी दोनों की तरफ से पैसा जाता है और सालाना करीब 8.25 प्रतिशत ब्याज मिलता है, वो भी कंपाउंडिंग के साथ। सबसे खास बात यह है कि ब्याज टैक्स-फ्री है। इसलिए ये सैलरीड लोगों के लिए सबसे अच्छा और कम रिस्क वाला तरीका है पैसा बढ़ाने का। ईपीएफओ (कर्मचारी भविष्य निधि संगठन) के नियमों के मुताबिक, ईपीएफ से निकासी बहुत सीमित है ताकि रिटायरमेंट का पैसा सुरक्षित रहे। आम लोन जैसे पर्सनल लोन या क्रेडिट कार्ड का बिल चुकाने के लिए ईपीएफ से पैसा नहीं निकाल सकते। सिर्फ हाउसिंग लोन चुकाने के लिए ही कुछ खास शर्तों के साथ निकासी की इजाजत है, जैसा कि ईपीएफ स्कीम, 1952 में लिखा है।

होम लोन समय के साथ हल्का क्यों लगता है

होम लोन के मामले में समय के साथ बोझ कम होता जाता है। ईएमआई चलते-चलते ब्याज का हिस्सा घटता है और मूल रकम का हिस्सा बढ़ता है। साथ ही, आमतौर पर सैलरी बढ़ती है, इन्फ्लेशन के साथ करियर आगे बढ़ता है, तो ईएमआई का बोझ रिलेटिव तरीके से कम लगने लगता है। टैक्स का भी फायदा है। पुराने टैक्स रिजीम में प्रिंसिपल और ब्याज दोनों पर छूट मिलती है, जिससे लोन की असली लागत कम हो जाती है। नए टैक्स रिजीम में ये फायदा नहीं है, लेकिन एक्सपर्ट कहते हैं कि ईपीएफ का लंबे समय तक कंपाउंडिंग इतना मजबूत है कि वो लोन जल्दी चुकाने से मिलने वाली बचत से ज्यादा फायदा देता है।

ब्याज दर का जाल

पहली नजर में आंकड़े थोड़े भ्रमित कर सकते हैं। अभी होम लोन की दरें करीब 7-7.5 प्रतिशत के आसपास हैं, जो ईपीएफ के 8.25 प्रतिशत से थोड़ी कम लगती हैं। फर्क छोटा-सा दिखता है। लेकिन ईपीएफ का ब्याज टैक्स-फ्री है, तो 30 प्रतिशत टैक्स स्लैब वाले के लिए ये 8.25 प्रतिशत करीब 11 प्रतिशत के बराबर टैक्सेबल रिटर्न देता है। इतना पोस्ट-टैक्स रिटर्न बहुत कम सुरक्षित निवेश देते हैं।

कब ईपीएफ निकालना सही

ईपीएफओ के नियमों के अनुसार, हाउसिंग लोन चुकाने के लिए ईपीएफ से पैसा सिर्फ एक बार जीवन में निकाला जा सकता है। इसके लिए कुछ शर्तें हैं, जैसे कम से कम 10 साल की सदस्यता, निकासी की सीमा वेतन, बैलेंस या बकाया लोन से जुड़ी होती है। पैसा सीधे लेंडर को जाता है। एक्सपर्ट कहते हैं कि ईपीएफ निकालना सिर्फ कुछ खास स्थितियों में सोचना चाहिए, जैसे: रिटायरमेंट के करीब पहुंच चुके हों और ईपीएफ में काफी ज्यादा बचत हो। बहुत ज्यादा कैश-फ्लो का दबाव हो और कोई दूसरा रास्ता न बचा हो। लोन की बाकी रकम कुल रिटायरमेंट कोष के मुकाबले बहुत छोटी हो। ऐसे मामलों में भी पहले अच्छे से कैलकुलेशन करना और किसी प्रोफेशनल से सलाह लेना बहुत जरूरी है।

इक्विटी म्यूचुअल फंड में निवेश 6% घटा, पर फ्लेक्सी-कैप ने बनाया रिकॉर्ड

शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव का असर म्यूचुअल फंड पर भी दिखा

रिपोर्ट | बिजनेस डेस्क

दिसंबर में शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव का असर म्यूचुअल फंड निवेश पर भी साफ नजर आया। एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया यानी एएमएफआई के ताजा आंकड़ों के मुताबिक दिसंबर में इक्विटी म्यूचुअल फंड्स में निवेश 6% घटकर 28,054 करोड़ रुपये रह गया। जबकि नवंबर में यह आंकड़ा 29,911 करोड़ रुपये था। अगर साल-दर-साल के आधार पर तुलना करें, तो गिरावट और भी साफ दिखती है। दिसंबर 2024 के मुकाबले दिसंबर 2025 में इक्विटी फंड्स में निवेश 32% कम रहा। पिछले साल दिसंबर में इक्विटी फंड्स में 41,155 करोड़ रुपये का निवेश हुआ था। हालांकि पूरे कैलेंडर वर्ष 2025 की बात करें, तो निवेशकों ने इक्विटी म्यूचुअल फंड्स में कुल 3.03 लाख करोड़ रुपये लगाए।

फ्लेक्सी-कैप फंड्स पर निवेशकों का भरोसा बरकरार

इक्विटी म्यूचुअल फंड्स की कुल 11 कैटेगरी में से 9 में दिसंबर के दौरान निवेश आया। सिर्फ डिविडेंड यील्ड फंड और ईएलएसएस फंड्स से पैसा निकला। इन सभी कैटेगरी में फ्लेक्सी-कैप फंड्स सबसे आगे रहे। इस कैटेगरी में दिसंबर के दौरान 10,019 करोड़ रुपये का नेट निवेश हुआ, जो अब तक का सबसे ऊंचा स्तर है। निवेशक में इस बात पर ज्यादा भरोसा नजर आया कि फ्लेक्सी-कैप फंड्स के मैनेजर बाजार की स्थिति के हिसाब से लार्ज, मिड और स्मॉल कैप शेयर्स में निवेश को एडजस्ट कर सकते हैं।

मिडकैप और लार्ज एंड मिडकैप फंड्स भी चर्चा में

फ्लेक्सी-कैप के बाद मिडकैप फंड्स दूसरे नंबर पर रहे। दिसंबर में इन फंड्स में 4,175 करोड़ रुपये का निवेश हुआ। वहीं लार्ज एंड मिडकैप फंड्स में 4,093 करोड़ रुपये की आमद दर्ज की गई। इससे यह संकेत मिलता है कि निवेशक अभी भी ग्रोथ की संभावनाओं वाले शेयरों में रुचि बनाए हुए हैं।

सेक्टोरल और स्मॉलकैप फंड्स में गिरावट

सेक्टोरल और थीमैटिक फंड्स के लिए दिसंबर थोड़ा फीका रहा. इन फंड्स में निवेश महीने-दर-महीने आधार पर 49% घटकर 945 करोड़ रुपये रह गया। नवंबर में यह आंकड़ा 1,864 करोड़ रुपये था। स्मॉलकैप फंड्स में भी 13% की गिरावट देखने को मिली. दिसंबर में इन फंड्स में 3,823 करोड़ रुपये का निवेश हुआ। बाजार की वैल्यूएशन और अस्थिरता को देखते हुए निवेशक स्मॉलकैप से थोड़ा सतर्क नजर आए।

ईएलएसएस और डिविडेंड यील्ड फंड्स से पैसा निकला

दिसंबर में टैक्स सेविंग ईएलएसएस फंड्स से 717 करोड़ की निकासी हुई। वहीं, डिविडेंड यील्ड फंड्स से 254 करोड़ बाहर चले गए। निवेशकों की बदली प्राथमिकताओं का असर यहां साफ दिखा।

पूरे साल 2025 में कौन सी इक्विटी कैटेगरी रही आगे

कैलेंडर वर्ष 2025 की बात करें, तो फ्लेक्सी-कैप फंड्स पूरे साल निवेशकों की पहली पसंद रहे। इस कैटेगरी में साल भर में 80,978 करोड़ रुपये का निवेश आया। इसके बाद स्मॉलकैप फंड्स में 52,321 करोड़ रुपये और मिडकैप फंड्स में 49,939 करोड़ की नेट इनफ्लो दर्ज की गई।

डेट फंड्स से बड़े पैमाने पर निकाले गए पैसे

जहां इक्विटी में निवेश धीमा पड़ा, वहीं डेट म्यूचुअल फंड्स में दिसंबर के दौरान भारी निकासी देखने को मिली। इस महीने डेट फंड्स से कुल 1.32 लाख करोड़ रुपये बाहर निकल गए। नवंबर में यह निकासी 25,692 करोड़ रुपये थी। दिलचस्प बात यह है कि दिसंबर 2024 में भी डेट फंड्स से करीब 1.27 लाख करोड़ रुपये की निकासी हुई थी।

16 में से 14 डेट फंड कैटेगरी में आउटफ्लो

डेट फंड्स की 16 कैटेगरी में से सिर्फ ओवरनाइट फंड्स और फ्लोटर फंड्स में निवेश आया। बाकी 14 कैटेगरी में पैसा निकला। लिक्विड फंड्स से सबसे ज्यादा 47,307 करोड़ रुपये की निकासी हुई। इसके बाद मनी मार्केट फंड्स से 40,464 करोड़ रुपये बाहर निकले।

साल भर में डेट फंड्स का हाल

पूरे 2025 में डेट म्यूचुअल फंड्स में कुल 1.19 लाख करोड़ रुपये का नेट निवेश आया। मनी मार्केट फंड्स इस दौरान सबसे आगे रहे, जिनमें 66,993 करोड़ रुपये का निवेश हुआ। वहीं गिल्ट फंड्स में पूरे साल में 5,680 करोड़ रुपये की सबसे ज्यादा निकासी दर्ज की गई।

हाइब्रिड फंड्स में निवेश भी घटा

दिसंबर में हाइब्रिड फंड्स में निवेश 19% घटकर 10,755 करोड़ रुपये रह गया। नवंबर में यह आंकड़ा 13,299 करोड़ रुपये था, जबकि दिसंबर 2024 में हाइब्रिड फंड्स में सिर्फ 4,369 करोड़ रुपये का निवेश हुआ था। पूरे 2025 में हाइब्रिड फंड्स में कुल 1.56 लाख करोड़ रुपये का निवेश आया। हाइब्रिड फंड्स की 6 कैटेगरी में से कंजर्वेटिव हाइब्रिड फंड्स को छोड़कर सभी में निवेश पॉजिटिव रहा। मल्टी-एसेट एलोकेशन फंड्स में दिसंबर में नेट इनफ्लो 7,425 करोड़ रुपये का हुआ। इसके बाद एग्रेसिव हाइब्रिड फंड्स में 1,513 करोड़ रुपये का निवेश आया।

पैसिव फंड्स और ईटीएफ में उछाल

इंडेक्स फंड्स और ईटीएफ जैसी दूसरी स्कीम्स में दिसंबर के दौरान निवेश में 74% की तेज बढ़ोतरी हुई। नवंबर में जहां इन फंड्स में 15,385 करोड़ रुपये आए थे, वहीं दिसंबर में यह आंकड़ा बढ़कर 26,723 करोड़ रुपये हो गया। दिसंबर 2024 में पैसिव फंड्स में कुल निवेश सिर्फ 784 करोड़ रुपये था, ऐसे में इस साल की बढ़त काफी मजबूत मानी जा रही है।

खबर संक्षेप

शिविर में 26 युवाओं ने किया रक्तदान

जींद। साधू आश्रम ईगराह में जोशी समाज सेवा समिति द्वारा स्वामी सूर्यानंद सरस्वती के 57वें जन्मदिन पर स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इसमें एक महिला सहित 26 युवाओं ने रक्तदान किया। समिति के प्रधान विनोद ने बताया कि रक्तदान शिविर का आयोजन राष्ट्रपति अवार्डी सुभाष ढिगाना के सहयोग से किया गया। इसमें भाजपा नेता कैप्टन योगेश बैरागी, मार्कीटिंग बोर्ड के अधीक्षक अभियन्ता नवीन दहिया सहित अनेक गणमान्य लोग मौजूद रहे।

किसान नेत्री पर धमकी देने का मामला दर्ज

जींद। इनेलो महिला विंग की जिलाअध्यक्ष को ऑडियो रिकार्डिंग भेज कर धमकी देने तथा अभद्र भाषा का प्रयोग करने पर सदर थाना पुलिस ने किसान नेत्री के खिलाफ मामला दर्ज किया है। जिलाअध्यक्ष सुदेश कंडेला ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि उसके व्हाट्सअप पर किसान नेत्री गांव सफाखेड़ी निवासी डा. सिक्कम की ऑडियो रिकार्डिंग आई। जिसमें डा. सिक्कम उसे गाली गलौज करते धमकी दे रही थी। सिक्कम ने उसके बारे में अभद्र भाषा का प्रयोग करते उससे अनर्गल बातें की और बुरा अंजाम भुगतने की धमकी दी।

भद्दे कमेंट्स करने का आरोपित दबोचा

जींद। उचाना थाना पुलिस ने फर्जी इंस्टाग्राम आईडी बना भद्दे कमेंट्स कर परेशान करने के एक आरोपित को गिरफ्तार किया है। पुलिस आरोपित से पूछताछ कर रही है। गांव करसिंधु निवासी विनोद ने गत 29 अक्टूबर को पुलिस को दी शिकायत में बताया था कि गांव भंडेरी सोनीपत निवासी साहिल ने फर्जी नाम से इंस्टाग्राम पर आईडी बनाई हुई है। जो उस आईडी से भद्दे कामेंट्स डाल रहा है। जिसके कारण उसे भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। शिकायत के आधार पर उचाना थाना पुलिस ने साहिल के खिलाफ आईटी एक्ट के तहत मामला दर्ज किया था।

बच्चों को पिलाया जाएगा फ्री स्वर्ण प्राशन संस्कार

जींद। हनुमान मंदिर उचाना मंडी नजदीक रविदास मंदिर में बच्चों के स्वास्थ्य एवं सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते निःशुल्क स्वर्ण प्राशन संस्कार पिलाया जाएगा। भारतीय चिकित्सा परिषद के सदस्य डा. जितेंद्र गिल ने जानकारी देते बताया कि स्वर्ण प्राशन प्राचीन आयुर्वेदिक परंपरा है, जिसमें बच्चों को विशेष रूप से तैयार औषधि दी जाती है। यह औषधि स्वर्ण भस्म, गोघृत, मधु, ब्राह्मी, शंखपुष्पी, जटामांसी जैसी दुर्लभ एवं गुणकारी जड़ी, बूटियों से बनाई जाती है।

राज्य पुरस्कारों के लिए आवेदन आमंत्रित

जींद। जिला समाज कल्याण अधिकारी सरफराज खान नें जानकारी देते बताया हरियाणा सरकार द्वारा वरिष्ठ नागरिकों के कल्याण, श्रेष्ठ ग्राम पंचायतों, श्रेष्ठ स्वैच्छिक संस्थाओं (एनजीओ) तथा अन्य श्रेणियों में उत्कृष्ट कार्य करने वालों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से वर्ष 2025-26 के लिए राज्य स्तरीय पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे। जिला समाज कल्याण अधिकारी ने बताया कि इन पुरस्कारों के लिए ऑनलाइन आवेदन करने के लिए सरकार द्वारा पोर्टल 12 जनवरी 2026 तक खोला गया है।

आपदा प्रबंधन पुरस्कार के लिए आवेदन आमंत्रित

जींद। भारत सरकार के गृह मंत्रालय के अधीन राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण की ओर से सुभाष चन्द्र बोस आपदा प्रबंधन पुरस्कार 2027 के लिए ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। व्यक्तियों और संगठनों के अमूल्य योगदान और निस्वार्थ सेवा भाव को पहचानने और सम्मानित करने के लिए सुभाष चंद्र बोस आपदा प्रबंधन पुरस्कार के नाम से वार्षिक पुरस्कार दिया जाता है। इस पुरस्कार की घोषणा हर साल 23 जनवरी को नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती पर की जाती है।

आत्मनिर्भर हरियाणा की नींव स्किल्ड युवाओं से ही मजबूत होगी : डॉ. मिड्ढा

हरियाणा विधानसभा के डिप्टी स्पीकर ने किया एआई आधारित कंप्यूटर लैब का शुभारंभ

युवाओं को मिले हरियाणा कौशल व डिजिटल स्किल्स के प्रमाण पत्र

हरिभूमि न्यूज ▶▶| जींद

महात्मा गांधी शिक्षा एवं समाज विकास संगठन द्वारा हरियाणा नॉलेज कॉरपोरेशन लिमिटेड के सहयोग से शनिवार को एआई आधारित कंप्यूटर लैब शुरू की। लैब का शुभारंभ हरियाणा विधानसभा के डिप्टी स्पीकर डा. कृष्ण मिड्ढा ने किया। युवाओं को संबोधित करते कहा कि आत्मनिर्भर हरियाणा की नींव स्किल्ड युवाओं से ही मजबूत होगी। आज के समय में तकनीकी शिक्षा और स्किल डेवलप्मेंट युवाओं के लिए सबसे बड़ा हथियार है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डिजिटल स्किल्स से जुड़कर युवा न केवल रोजगार प्राप्त करेंगे बल्कि भविष्य में रोजगार देने वाले भी बनेंगे। इस अवसर पर भाजपा युवा मोर्चा के प्रदेश उपाध्यक्ष कैप्टन योगेश बैरागी, अखिल भारतीय अग्रवाल समाज के प्रदेश अध्यक्ष डा. राजकुमार गोयल, डिप्टी एमएस डा. राजेश भोला, राजन चिलाना, डा. मनजीत आदि मौजूद रहे। कै योगेश बैरागी ने कहा कि हरियाणा का युवा अत्यंत प्रतिभाशाली है, आवश्यकता है उसे सही दिशा और आधुनिक तकनीक से जोड़ने की। इस प्रकार के कार्यक्रम युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में मील का पत्थर साबित होते हैं। संस्था अध्यक्ष राजकुमार ने कहा कि नवस्थापित एआई कंप्यूटर लैब में युवाओं को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, साइबर सिक्योरिटी, डिजिटल लिटरेसी एवं आधुनिक कौशल विकास का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाएगा। सभी प्रशिक्षण कार्यक्रम नई शिक्षा नीति के अनुरूप ऑनलाइन व ऑफलाइन दोनों माध्यमों से संचालित होंगे।

लैब के शुभारंभ पर बच्चों को सर्टिफिकेट वितरित करते डिप्टी स्पीकर डा. कृष्ण मिड्ढा।

ये रहे मौजूद

डिप्टी सीएमओ डा. राजेश भोला ने कहा कि तकनीकी प्रशिक्षण से युवा न केवल आर्थिक रूप से सशक्त होंगे बल्कि समाज और प्रदेश के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। इस प्रकार की एआई लैब युवाओं के लिए नए अवसरों के द्वार खोलेंगी। इस मौके पर डा. राजिंद्र कुमार, दीपिका भोला, राकेश श्योकंद, रघुबीर भारद्वाज, पवन कौशिक, अंकिता खटकड़, दर्शन सिंह ढांडा, सावर गर्ग, रामधन जैन, जयदेव अहिरका सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

कोर्स वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाएंगे

इन कोर्सों से हरियाणा कौशल रोजगार निगम की भर्तियों में युवाओं को अतिरिक्त अंकों का लाभ भी मिलेगा। इस अवसर पर एआई एवं डिजिटल स्किल्स में प्रशिक्षण प्राप्त कर सफल हुए विद्यार्थियों को हरियाणा कौशल के प्रमाण पत्र वितरित किए गए। डा. राजकुमार गोयल ने कहा कि आज की शिक्षा केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नही रहनी चाहिए। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डिजिटल स्किल्स जैसे आधुनिक कोर्स युवाओं को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाएंगे।

राजकीय प्राथमिक शिक्षक संघ ने डिप्टी स्पीकर को सौंपा ज्ञापन

अंतर-जिला स्थानांतरण की सुविधा वरिष्ठता के आधार पर लागू की जाए

खंड को भी विकल्प के रूप में खोला जाए

परिवार से दूर कार्यरत शिक्षक अपने गृह जिले में सेवा कर सकें

हरिभूमि न्यूज ▶▶| जींद

राजकीय प्राथमिक शिक्षक संघ ने मांगों को लेकर हरियाणा विधानसभा के डिप्टी स्पीकर डा. कृष्ण मिड्ढा को ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन के माध्यम से अंतर-जिला स्थानांतरण की सुविधा सभी जिलों में वरिष्ठता के आधार पर लागू करने की मांग उठाई गई ताकि लंबे समय से अपने परिवार से दूर कार्यरत शिक्षक अपने गृह जिले में सेवा कर सकें। ज्ञापन सौंपने से पहले जाट धर्मशाला में राजकीय प्राथमिक शिक्षक संघ की बैठक जींद ब्लॉक प्रधान देवी दयाल चहल की अध्यक्षता में हुई। ज्ञापन के माध्यम से अंतर-जिला स्थानांतरण की सुविधा सभी जिलों में वरिष्ठता के आधार पर लागू करने की मांग उठाई ताकि लंबे समय से अपने परिवार से दूर कार्यरत शिक्षक अपने गृह जिले में सेवा कर सकें।उन्होंने कहा कि वर्तमान में शिक्षा विभाग द्वारा सामान्य स्थानांतरण (जनरल ट्रांसफर ड्राइव) चलाई जा रही है। संघ का कहना है कि नई स्थानांतरण नीति में विद्यालय में पांच वर्ष एवं खंड में 15 वर्ष की बाध्यता स्वीकार्य है लेकिन जिन अध्यापकों का एक ही खंड में 15 वर्ष का सेवाकाल पूर्ण हो चुका है, उन्हें स्थानांतरण प्रक्रिया में शामिल करते हुए उसी खंड को भी विकल्प के रूप में खोला जाए। यदि संबंधित अध्यापक मेरिट के आधार पर पात्र हो, तो उसे उसी खंड में स्थानांतरण का लाभ मिलना चाहिए।

जींद। मांगों को लेकर डिप्टी स्पीकर को ज्ञापन सौंपते हुए अध्यापक।

एसीपी का लाभ प्रदान किया जाए

जिला प्रधान जितेन्द्र बैनीवाल, जिला कोषाध्यक्ष अभिमन्यु रेढू ने चिकित्सा प्रतिपूर्ति के विषय में कहा कि संघ ने कर्मचारियों के आश्रित माता-पिता एवं अन्य परिजनों के लिए निर्धारित 42 हजार की आय सीमा को समाप्त कर असीमित करने की मांग की ताकि गंभीर बीमारी की स्थिति में कर्मचारियों को पर्याप्त आर्थिक राहत मिल सके। पूर्व राज्य सह संयोजक राजेश खरब ने कहा कि एसीपी लाभ को लेकर संघ ने मांग की कि सर्विस रूल्स 2016 के तहत एनसीटीई से मान्यता प्राप्त प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों को, 12वीं कक्षा में 45 प्रतिशत अंकों की शर्त पूर्ण होने पर, एसीपी का लाभ प्रदान किया जाए। पूर्व जिला प्रधान रूपेन्द्र गोयत ने छात्र शिक्षक हित को ध्यान में रखते हुए कहा कि अध्यापकों को गैर शैक्षणिक कार्यों से दूर रखा जाए। इकबाल सिंह ने अंतर-जिला स्थानांतरण की सुविधा सभी जिलों में वरिष्ठता के आधार पर लागू करने की मांग उठाई ताकि लंबे समय से अपने परिवार से दूर कार्यरत शिक्षक अपने गृह जिले में सेवा कर सकें। इस अवसर पर सफीदों ब्लॉक प्रधान वेद प्रकाश, अनिल, प्रमेश, राजेश रेढू, जोगिंदर सिंह, राममेहर, सुखबीर, जसबीर, मनजीत, विजय, मांगे राम सहित अनेक पदाधिकारी उपस्थित रहे।

प्रदर्शन में भाग लेने का आह्वान

जींद। हरियाणा ग्रामीण सफाई कर्मचारी यूनियन ने ब्लॉक प्रधान राजेंद्र ढांडा के नेतृत्व में जनसंपर्क अभियान चलाया। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट के 31 दिसंबर 2025 के ऐतिहासिक फैसले को तुरंत लागू करवाना तथा ठेका प्रथा समाप्ति, पक्की नौकरी, न्यूनतम वेतन और सामाजिक सुरक्षा की मांगों को लेकर आगामी आंदोलनों में पूर्ण भागीदारी सुनिश्चित करना रहा। इस दौरान गांव बराह खुर्द, बराह कलां, तलोडा खेड़ी, मनोहरपुर सहित अन्य आसपास के गांवों में ग्रामीण सफाई कर्मचारियों से व्यक्तिगत एवं सामूहिक संपर्क किया गया। कर्मचारियों को हाईकोर्ट के आदेश की मुख्य बातें समझाई गई। जिसमें 10 वर्ष या उससे अधिक सेवा पूर्ण कर चुके सभी सफाई कर्मचारियों को पक्का करने, छह प्रतिशत ब्याज सहित एरियर भुगतान और 26 फरवरी तक आदेश लागू करने के निर्देश शामिल हैं। यूनियन ने सभी सफाई कर्मचारियों से 19 जनवरी को जिला मुख्यालय जींद पर होने वाले जोरदार प्रदर्शन में बढ़चढ़ कर भाग लेने का आह्वान किया। इस प्रदर्शन के माध्यम से सरकार पर कोर्ट आदेश तुरंत लागू करने का दबाव बनाया जाएगा। यूनियन ने सभी ग्रामीण सफाई कर्मचारियों से अपील की है कि वे दस्तावेज तैयार रखें और 10 वर्ष से अधिक सेवा वाले कर्मचारी नई याचिकाओं के लिए यूनियन कार्यालय से संपर्क करें।

टीक के उदयवीर ने राष्ट्रीय शूटिंग चैंपियनशिप में जीता सिल्वर मेडल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कैथल

गांव टीक में जन्मे उदयवीर तंवर ने हैदराबाद (आंध्र प्रदेश) में संपन्न हुई राष्ट्रीय 10 मीटर राइफल शूटिंग प्रतियोगिता में दूसरा स्थान प्राप्त कर सिल्वर मेडल जीत कर अपने गांव टीक जिला कैथल व हरियाणा प्रदेश का नाम रोशन किया। प्रेस के नाम ब्यान जारी कर पहल सिंह तंवर प्रदेश अध्यक्ष एटक हरियाणा ने कहा कि उदयवीर ने 6-7-8 जनवरी को हैदराबाद में आयोजित डीएवी राष्ट्रीय शूटिंग चैम्पियनशिप अंडर -14 वर्ग में सिल्वर मेडल जीत कर आए अपने परिवार व गांव टीक में खुसी की लहर दौड़ गई व परिवार जनों को जीत के बधाई संदेश आने से परिवार में त्योंहारों जैसी खुसी महसूस हो रही है।

पहल सिंह ने उदयवीर की जीत पर खुशी जाहिर करते कहा कि उदयवीर हंस राज पब्लिक स्कूल पंचकूला में 7 वीं कक्षा का विधार्थी है व सैक्टर -25 पंचकूला में शूटिंग नर्सरी में कोचिंग सेंटर में लगातार दो वर्ष से अभ्यास करते उदयवीर ने ओपन प्रदेश स्तरीय व राष्ट्रीय शूटिंग चैम्पियनशिप अंडर 14 वर्ग में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।

कैथल। उदयवीर तंवर अपने साथी खिलाड़ियों के साथ। फोटो :हरिभूमि

मेरठ में महिला की हत्या ने खोली सरकार की नीतियों की पोल

जींद। अखिल भारतीय जनवादी महिला समिति की जिला कमेटी जींद, उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले के सरधना थाना क्षेत्र के कपसाड़ गांव में हुई महिला सुनीता की नृशंस हत्या और उनकी बेटी रूबी के अपहरण की घटना की कड़ी निंदा करती है। यह घटना महिलाओं के खिलाफ बढ़ती हिंसा का एक और जघन्य उदाहरण है, जो राज्य सरकार की महिला सुरक्षा संबंधी नीतियों की पोल खोलती है। जनवादी महिला समिति की जिला प्रधान आशा ने कहा कि एक मां अपनी बेटी को बचाने के लिए आगे आई, तो उसे मौत के घाट उतार दिया गया। ये न केवल महिलाओं पर अत्याचार है बल्कि जातिवादी मानसिकता और दबंगों के हौसले का प्रतीक है। महिला समिति की जिला सचिव कोशिगन ने बताया कि हम उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के उस बयान की सच्चाई पर सवाल उठाते हैं, जिसमें उन्होंने दावा किया था कि महिला को छेड़ा तो अगले चौराहे पर यमराज खड़े मिलेंगे। जमीनी स्तर पर महिलाओं की सुरक्षा के लिए कोई ठोस इंतजाम नहीं हैं।

खबर संक्षेप

सफाई कर्मचारियों को वितरित किए गर्म जैकेट

कलायत। कलायत विधानसभा से पूर्व प्रत्याशी पंडित विनोद निर्मल द्वारा नगर पालिका के सफाई कर्मचारियों को सर्दी के मौसम में राहत पहुंचाने के उद्देश्य से गर्म जैकेट उपहार स्वरूप भेंट की गई। जनसेवा की भावना से प्रेरित यह कार्यक्रम उनके निवास स्थान पर आयोजित किया गया, जिसमें सफाई कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस सेवा कार्य को विनोद निर्मल ने अपनी बुजुर्ग माता भागवंती और बड़े भाई विजय निर्मल के माध्यम से विधिवत रूप से संपन्न करवाया। जिससे कार्यक्रम में पारिवारिक और सामाजिक सरोकार की झलक भी देखने को मिली। इस दौरान सफाई सुपरवाइजर सोमप्रकाश शर्मा और विकास खरक मौजूद रहे। निर्मल की तरफ से सुबह के समय सफाई कर्मचारियों को अचानक सौगात को प्राप्त करने का निमंत्रण मिला, जिससे वे उत्साहित नजर आए। निर्मल आवास पर आयोजित कार्यक्रम में कर्मचारियों को एक-एक कर गर्म जैकेट प्रदान की गईं। सर्द मौसम में यह उपहार उनके लिए न केवल उपयोगी साबित होगा बल्कि उनके मनोबल को भी बढ़ाने वाला है। पंडित विनोद निर्मल ने कहा कि सफाई कर्मचारी किसी भी शहर की रीढ़ होते हैं। वे प्रतिदिन सुबह से लेकर शाम तक शहर को साफ-सुथरा रखने के लिए मेहनत करते हैं।

लोगों से कूड़ा डस्टबिन में डालने का आह्वान किया

जींद। सामाजिक संस्था सोसाइटी फोर एडवांसमेंट आफ विलेज एंड अर्बन इंवायरमेंट सेव ने शनिवार दोपहर बाद सफीदों रोड पर स्कीम नंबर पांच से रिलायंस स्मार्ट बाजार एरिया तक स्वच्छता अभियान और जागरूकता अभियान चलाया। सेव संस्था द्वारा ये 451वां अभियान संस्था के प्रधान नरेंद्र नाडा की अध्यक्षता में चलाया गया। संस्था सदस्यों ने स्वच्छता का महत्व समझाते हुए लोगों को कूड़ा डस्टबिन में डालने का आह्वान किया। संस्था के सदस्यों ने लोगों को समझाया कि गंदगी हम फैलाते हैं, वह भी खुले में कूड़ा डाल कर। यदि हम सभी सहयोग करें तो स्वच्छता रह सकती है। हर आदमी ने हर प्रकार का कूड़ा डस्टबिन में ही डालना चाहिए। जब सभी लोग डस्टबिन का प्रयोग करेंगे तभी स्वच्छता रहेगी। वह डस्टबिन नगर परिषद की गाड़ी को ही देना चाहिए। जब हम खुले में कुड़ा डालना बंद कर देंगे तभी स्वच्छता रहेगी। इसी से हमारा शहर, गांव और देश स्वच्छ होगाए हमारा स्वास्थ्य भी सही रहेगा और हमारे बच्चों का भविष्य भी उज्ज्वल होगा। बलबीर श्योकंद, फूल कुमार सैनी, मास्टर जोरा सिंह रेढू, सुजान सिंह पूनिया, हरवीर सिंह, अजय आदि ने योगदान किया।

सीवन। आयोजित कार्यक्रम में पहुंचे कृषि वैज्ञानिक। फोटो :हरिभूमि

खेती में सफलता का आधार उत्तम गुणवत्ता वाला बीज

सीवन। आलू की खेती को अधिक लाभकारी और वैज्ञानिक बनाने के उद्देश्य से आलू ट्रेनिंग सेंटर (पीटीसी) श्यामगढ़, जिला करनाल एवं केंद्रीय इंटरनेशनल पोटैटो संस्थान की ओर से एक प्रशिक्षण एवं जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम सीवन क्षेत्र के प्रगतिशील किसान मनीष मेहता मोजी के फार्म हाउस पर आयोजित हुआ, जिसमें देश के विभिन्न राज्यों से आए किसानों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य किसानों को आलू की उन्नत खेती, गुणवत्तापूर्ण बीज, रोग नियंत्रण और आधुनिक तकनीकों की जानकारी देना रहा। संबंधित विभाग से डॉ. महेंद्र सिंह कादियान, डॉ. दीपा एवं डॉ. कृष्ण मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता पिंकी मेहता, लविश मेहता एवं जानवी ने की। मुख्य अतिथि डॉ. महेंद्र सिंह कादियान ने किसानों को संबोधित करते कहा कि आलू की खेती में सफलता का आधार उत्तम गुणवत्ता वाला बीज है। कहा कि यदि किसान वायरस मुक्त, प्रमाणित और जल्दी पैदावार देने वाला बीज लगाते हैं तो उत्पादन के साथ-साथ फसल की गुणवत्ता भी बेहतर होती है। डॉ. कादियान ने बताया कि खराब बीज से उत्पादन घटता है और लागत बढ़ जाती है, इसलिए बीज चयन में लापरवाही नहीं बरतनी चाहिए।

हिसार में दो को पंडित जसराज जयंती का राज्य स्तरीय समारोह

जींद। शास्त्रीय संगीत के महान पुरोधा पद्म विभूषण से सम्मानित पंडित जसराज की जयंती के अवसर पर दो फरवरी को उनके पैतृक गांव पीली मंदौरी हिसार में राज्य स्तरीय जयंती समारोह का भव्य आयोजन किया जाएगा। इस ऐतिहासिक समारोह में हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत करेंगे और अलावा सूबे के कई मंत्री व विधायकगण भी पंहुच कर समारोह की शोभा बढ़ाएंगे। जयंती समारोह को भव्य और यादगार रूप देने को लेकर स्थानीय लोक निर्माण विभाग के विश्राम गृह में डूम समाज के लोगों की बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता जयंती समारोह के अध्यक्ष ओमप्रकाश मालिया ने की। उनके साथ हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के उपाध्यक्ष सतीश शाहपुर विशेष रूप से मौजूद रहे।

नरवाना। कार्यक्रम में सम्मानित करते हुए। फोटो :हरिभूमि

विश्व हिंदी दिवस पर भाषण प्रतियोगिता

नरवाना। केएम राजकीय महाविद्यालय नरवाना में विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में भाषण प्रतियोगिता का आयोजन हिंदी विभाग एवं भारतेंदु परिषद द्वारा किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के तौर पर सेवानिवृत्त डॉ संतरो लांबा ने शिरकत की। कार्यक्रम का शुभारंभ करते प्राचार्या डॉ मीनू सिंह ने कहा कि विश्व हिंदी दिवस को मनाना केवल भाषा का उत्सव नही बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक चेतना, राष्ट्रीय अस्मिता का भी उत्सव है। यह विश्व के करोड़ों लोगों की भावनाओं एविचारों और सपनों की अभिव्यक्ति है। मुख्य वक्ता डॉ संतरो लांबा ने कहा कि विश्व हिंदी दिवस अधिकारिक तौर से 10 जनवरी 2006 से प्रतिवर्ष मनाते आ रहे हैं। हिंदी भाषा का स्वरूप बहुत समावेशी है । इसमें समय.समय पर संस्कृतए प्राकृत, अपभ्रंश, अरबी, फारसी और अंग्रेजी जैसी भाषाओं के शब्दों को आत्मसात करके हिंदी के वैश्विक फलक को जीवन्त और सशक्त बनाए रखा है। अंतरराष्ट्रीय मंचों, संयुक्त राष्ट्र संघ, अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों, डिजिटल प्लेटफॉर्म और सोशल मीडिया पर हिंदी का बहुतायत प्रयोग सिद्ध करता है कि हिंदी तकनीकी, विज्ञान, व्यापार और सृजनात्मक लेखन आदि हर क्षेत्र में नए आयाम स्थापित कर रही है।

कांग्रेस ने वीबीजी रामजी कानून को बताया छलावा

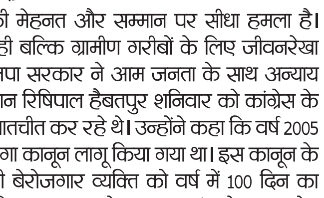

जींद। कांग्रेस के जिला प्रधान रिषिपाल हैबतपुर ने केंद्र की भाजपा सरकार पर महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) को खत्म करने का गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि यह फैसला देश के करोड़ों मेहनतकश मजदूरों की मेहनत और सम्मान पर सीधा हमला है। मनरेगा केवल एक योजना नही बल्कि ग्रामीण गरीबों के लिए जीवनरेखा रही है। जिसे समाप्त कर भाजपा सरकार ने आम जनता के साथ अन्याय किया है। कांग्रेस के जिला प्रधान रिषिपाल हैबतपुर शनिवार को कांग्रेस के जिला कार्यालय में पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। उन्होंने कहा कि वर्ष 2005 में तत्कालीन कांग्रेस द्वारा मनरेगा कानून लागू किया गया था। इस कानून के तहत ग्रामीण क्षेत्रों के किसी भी बेरोजगार व्यक्ति को वर्ष में 100 दिन का रोजगार मांगने का कानूनी अधिकार था। इससे हर साल पांच से छह करोड़ ग्रामीण श्रमिकों को रोजगार मिलता रहा। जिससे वे अपने परिवार का खर्च, बच्चों की पढ़ाई और इलाज जैसी बुनियादी जरूरतें पूरी कर पाते थे। भाजपा सरकार ने मनरेगा का नाम बदल कर विकसित भारत रोजगार आजीविका मिशन अधिनियम (वीबीजी रामजी) कर दिया है। जो देश के लोगों की सामाजिक और धार्मिक भावनाओं के साथ खुला खिलवाड़ है। मौके पर पूर्व युवा कांग्रेस जिला अध्यक्ष दिनेश डाहोला, पूर्व चेयरमैन पवन दूहन, रघुबीर भारद्वाज, डा. बलबीर आर्य, कुलवंत लाठर सरपंच, वेदपाल लाठर, संजय जागलान, कमल चौहान, धर्मपाल प्रधान, मदन धनवाल, सुभाष अहलावत, इशाक भट्टी, शिवा चौहान सहित काफी संख्या कार्यकर्ता मौजूद रहे।

नहीं नजर आ रही लोहड़ी की रौनक व उत्साह

राजौंद। लोहड़ी का पर्व नजदीक आ चुका है। उसके बावजूद भी वर्षों पहले लोहड़ी की रौनक व लोगों में उत्साह दिखाई नही दे रहा है। वर्षों पहले छोटे छोटे बच्चे टोलियां बनाकर लोहड़ी से कई-कई दिन पहले ही घर घर जाकर लोहड़ी मांगते थे, परंतु आधुनिकता की दौड़ के चलते यह सब एक गुजरे जमाने की बातें बनकर रह गई है। लोहड़ी को लेकर महिलाओं व लड़कियों में जो उत्साह पहले था वह भी समाप्त हो चुका है। जिस घर में लड़के का जन्म होता था उस घर में लोहड़ी की धूम काफी दिन पहले ही नजर आने लगती थी। लोहड़ी वाले दिन लड़के व लड़कियां टोलियां बनाकर उस घर के आंगन में लोहड़ी मांगने जाते थे। लोहड़ी के दिन मक्की के भूने हुए दाने व गुड़ एक शगुन के रूप में लोहड़ी मांगने वालों की झोली में डाले जाते थे।

जाजवान गांव में चलाया जागरूकता अभियान

नशा युवाओं के भविष्य पर बड़ा खतरा: शर्मा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| जींद

नशा आज समाज के लिए एक गंभीर सामाजिक एवं स्वास्थ्य संकट बन चुका है। यह धीरे-धीरे व्यक्ति की सोच सेहत और भविष्य को बर्बाद कर देता है। खासतौर पर युवा वर्ग तेजी से इसकी चपेट में आ रहा है, जो समाज के लिए चिंता का विषय है। इसी को देखते स्वास्थ्य विभाग द्वारा नशा मुक्ति को लेकर निरंतर जनजागरूकता कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र दरियावाला के तहत जाजवान में नशा उन्मूलन व जनजागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सुशील शर्मा एमपीएचडब्ल्यू ने उपस्थित ग्रामीणों को नशे के दुष्प्रभावों तथा इसके विभिन्न रूपों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। शर्मा ने बताया कि नशा केवल शराब तक सीमित नहीं है बल्कि इसके कई रूप हैं। इनमें शराब, बीड़ी, सिगरेट, तंबाकू, गुटखा, खैनी, पान मसाला जैसे सामान्य नशे शामिल हैं। इसके अलावा स्मैक, चरस, गांजा, अफीम, हेरोइन जैसे मादक पदार्थ अत्यंत घातक होते हैं। आज के समय में कुछ लोग नशीली दवाइयोंए सिरपए इंजेक्शन और गोलियों का भी गलत इस्तेमाल कर रहे हैंए जो जानलेवा साबित हो सकता है। उन्होंने बताया कि नशे के सेवन से लीवर, फेफड़े, हृदय और मस्तिष्क पर बुरा प्रभाव पड़ता है। नशे की लत व्यक्ति को मानसिक तनाव, अवसाद और हिंसक व्यवहार की ओर धकेल देती है। इससे पारिवारिक कलह बढ़ती है और आर्थिक स्थिति भी बिगड़ जाती है। कार्यक्रम में यह भी बताया गया कि नशा केवल व्यक्ति की नहीं बल्कि पूरे समाज की समस्या है। नशे के कारण अपराधए सड़क दुर्घटनाएं और घरेलू हिंसा जैसी घटनाएं बढ़ रही हैं।

जींद। ग्रामीणों को नशे के दुष्प्रभावों से अवगत करवाते हुए। फोटो :हरिभूमि

ये रहे मौजूद

सुशील शर्मा ने नशा छोडने के इच्छुक लोगों को स्वास्थ्य विभाग द्वारा उपलब्ध नशा मुक्ति केंद्रों और परामर्श सेवाओं की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि दृढ़ इच्छाशक्ति और परिवार के सहयोग से नशा छोड़ा जा सकता है। इस दौरान मुकेश, धर्मबीर, प्रकाश, रणबीर, मेवा, सतबीर आदि मुख्य रूप से मौजूद रहे।

नए बस स्टैंड पर अब नहीं होगी निजी वाहनों की एंट्री, लगेगा जुर्माना

■ बस स्टैंड प्रशासन ने लगाया प्रतिबंध

हरिभूमि न्यूज ▶▶ कैथल

यात्रियों की सुविधा व यातायात व्यवस्था सुचारू बनाते हुए हादसों पर रोक लगाने के उद्देश्य से नए बस स्टैंड में शनिवार से निजी वाहनों की एंट्री पर पूर्ण रूप से प्रतिबंध लगा दिया गया है। रोडवेज प्रशासन ने जिला प्रशासन के निर्देशों के तहत इस संबंध में आदेश जारी किए हैं। आदेशों के अनुसार अब बस स्टैंड में निजी वाहनों को प्रवेश नहीं दिया जाएगा। यदि कोई वाहन चालक नियमों की अनदेखी करेगा तो उसे पहली बार चेतावनी दी जाएगी। यदि वाहन चालक फिर भी नहीं माने तो एंट्री करने पर ट्रैफिक पुलिस की मदद से 500 रुपये जुर्माना लगाने का प्रावधान किया जाएगा। हालांकि अभी केवल रोडवेज कर्मियों ने मुख्य गेट से ही वाहनों को वापस भेजा जा रहा है। बस अड्डा प्रभारी सहित चार रोडवेज कर्मियों की ड्यूटी लगाई। निजी वाहनों की अनियंत्रित आवाजाही के कारण बस स्टैंड परिसर में आए दिन भीड़भाड़ की स्थिति बनी रहती थी। इससे न केवल यात्रियों को आने-जाने में परेशानी होती थी, बल्कि रोडवेज बसों के संचालन में भी बाधा उत्पन्न हो रही थी।

नियमों का पालन करने की अपील

यातायात प्रबंधक विपुल कुमार नंदल ने बताया कि बस स्टैंड प्रशासन की आमजन से अपील की है कि वे नियमों का पालन करें और अपने निजी वाहनों को निर्धारित पार्किंग स्थल पर ही खड़ा करें, ताकि बस स्टैंड परिसर में अव्यवस्था न फैले और यात्रियों को किसी प्रकार की असुविधा न हो। यदि कोई निजी वाहन चालक फिर भी नहीं मानेगा तो उस पर ट्रैफिक पुलिस की मदद से 500 रुपए के जुर्माना लगाने का फैसला भी जल्द लिया जाएगा। यह फैसला केवल बस स्टैंड पर आने वाले यात्रियों सहित अन्य लोगों की सुरक्षा को लेकर लिया गया है।

परिवहन समिति बसों की शिकायतें

बसों में बुजुर्गों-छात्रों से हो रहा दुर्व्यवहार

खास बातें

- परिवहन समिति की बसों में यात्रा करने वाले यात्रियों को हो रही परेशानी
- परिवहन आयुक्त हरियाणा चंडीगढ़ से मार्गदर्शन मांगा गया : आरटीए गिरीश कुमार

हरिभूमि न्यूज ▶▶ जींद

परिवहन समिति की बसों में विद्यार्थियों व बुजुर्गों के साथ बुरा व्यवहार करने की लगातार शिकायतें सामने आ रही हैं। इस कारण यात्रियों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। वहीं परिवहन समिति के बस संचालकों का कहना है कि विद्यार्थियों व बुजुर्गों के रियायती बस पास पर सफर करने का मामला कोर्ट में विचाराधीन है। कोर्ट के फैसले के बाद जो निर्देश मिलेंगे, उसके अनुसार यात्रियों को सुविधा दी जाएगी, जबकि रोडवेज बसों में विद्यार्थियों के साथ बुजुर्गों के रियायती पास मान्य हैं। ऐसे में कई बार परिवहन समिति के बस संचालकों और यात्रियों में भी नौक-झोक की स्थिति पैदा हो जाती है। जींद डिपो में लगभग 165 रोडवेज बस हैं, जिसमें किलोमीटर स्कीम की 37 बस शामिल हैं। इसके अलावा जींद जिले में परिवहन समिति की 162 बस अलग-अलग लोकल रूटों पर दौड़ रही है। हांसी, असंध, नरवाना, गोहाना और पानीपत जैसे लोकल रूट पर यात्रियों को प्राइवेट बसों का ही आसरा होता है। जिलेभर में अलग-अलग रूटों पर 162 प्राइवेट बसें दौड़ रही हैं। इनमें नरवाना रूट पर 31, असंध रूट पर 16, गोहाना और बरवाला रूट पर 19, हांसी रूट पर 26, पुंडरी रूट पर तीन, जींद से पानीपत रूट पर 26, पिल्लूखेड़ा से रोहतक रूट पर पांच, नरवाना से हांसी रूट पर पांच, नरवाना से कैथल रूट पर 24 और नरवाना से हिसार रूट पर 20 निजी बसें शामिल हैं। राष्ट्रीय युवा अवार्डी सुभाष ढिगाना सहित कई अन्य यात्रियों के साथ परिवहन समिति के बस संचालकों द्वारा बुरा व्यवहार करने और बीच रास्ते में उतारने की शिकायतें आ चुकी हैं। ऐसे में यात्री भी असमंजस की स्थिति में हैं कि जब रोडवेज बसों में उनके पास मान्य है तो परिवहन समिति की बसों में पास मान्य होने चाहिए। परिवहन समिति के प्रधान अजय कुमार ने कहा कि इस मामले को लेकर कोर्ट में केस चला हुआ है।

कोर्ट से जो भी आदेश आएगा वह मान्य होगा। फैसला आने के बाद जो भी निर्देश मिलेंगे उनका पालन किया जाएगा।

उच्च न्यायालय में केस विचाराधीन

आरटीए गिरीश कुमार ने बताया कि छात्र, छात्राओं के पास अन्य रियायती सुविधा देने बारे परिवहन समिति संचालकों द्वारा उच्च न्यायालय में केस विचाराधीन है। उच्च न्यायालय का फैसला सर्वमान्य होगा। तब तक विद्यार्थियों को भी चाहिए कि वह धीरज से काम लें। परिवहन समिति की बसों में हरियाणा राज्य परिवहन द्वारा जारी पास को मान्य होने बारे परिवहन आयुक्त हरियाणा चंडीगढ़ से मार्गदर्शन मांगा गया है।

जींद। जींद बस अड्डे पर खड़ी बसें। फोटो : हरिभूमि

खबर संक्षेप

डा. आंबेडकर वेलफेयर सोसायटी की बैठक आज

जींद। डा. बीआर अंबेडकर वेलफेयर सोसायटी की आम सभा की बैठक 11 जनवरी को प्रधान राजेश पहलवान की अध्यक्षता में गुरु रविदास धर्मशाला सफीदों रोड में होगी। प्रधान राजेश पहलवान ने समाज के लोगों से अपील की कि वे बैठक में पहुंचें।

दयालु योजना बनी गरीबों का सहारा

कैथल। डीसी अपराजिता ने बताया कि दीन दयाल उपाध्याय अंत्योदय परिवार सुरक्षा योजना (दयालु) अंत्योदय परिवारों के लिए वरदान साबित हो रही है। इस योजना के तहत एक लाख 80 हजार सालाना आय वाले परिवार के सदस्य की मृत्यु या स्थाई दिव्यांगता पर आर्थिक और सामाजिक सुरक्षा प्रदान की जाती है। विभिन्न श्रेणी में एक लाख रुपये से लेकर पांच लाख रुपये तक की आर्थिक सहायता दी जाती है।

पीएम विश्वकर्मा योजना से कारीगरों को नई पहचान

कैथल। डीसी अपराजिता ने कहा कि शिल्पकार व कारीगर समाज के नवनिर्माण में अपना बहुमूल्य सहयोग देते हैं। शिल्पकारों व कारीगरों के हुनर को सम्मान देते हुए पीएम विश्वकर्मा योजना चलाई जा रही है, जिससे उनके हुनर को पहचान मिल रही है। डीसी ने बताया कि योजना भारत की पारंपरिक कला और शिल्पकला को जीवित रखने और देश के कारीगरों और शिल्पकारों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने में सहायक है।

गेहूं की फसल के लिए ठंड अच्छी, बारिश हो तो सोने पर सुहागा

सुबह के समय कड़ाके की ठंड तो दिन में धूप दे रही राहत

किसान खेतों का प्रतिदिन निरीक्षण करते रहें

हरिभूमि न्यूज ▶▶ जींद

पिछले दो दिनों से सुबह के समय कड़ाके की ठंड और फिर दोपहर बाद कुछ समय के लिए सूर्य देवता के दर्शन दिए जाने से राहत मिल रही है। दिन में अच्छी धूप खिलती है तो आस जागती है कि अगले दिन सुबह ही अच्छी धूप निकलेगी लेकिन हो इसके विपरित रहा है। शाम होते-होते फिर शीत लहर चल पड़ रही है और तापमान में गिरावट आ रही है। शनिवार को भी सुबह कड़ाके की ठंड पड़ी और कुछ समय के लिए धुंध भी रही लेकिन तेज हवा चली और दस बजे के बाद सूर्य देवता बादलों की ओट से निकले। जिससे लोगों को ठंड से कुछ राहत मिली। शनिवार को अधिकतम तथा न्यूनतम तापमान में एक डिग्री का इजाफा हुआ। अधिकतम 13 डिग्री से बढ़ कर 14 डिग्री रहा तो न्यूनतम तापमान तीन डिग्री से बढ़ कर चार डिग्री दर्ज किया गया।

जींद। सुबह के समय धुंध के बीच गुजरता हुआ वाहन चालक। फोटो : हरिभूमि

बच्चों तथा वृद्धों की विशेष देखभाल की सख्त जरूरत

इस समय पड़ रही कडाके की ठंड गेहूं फसल के लिए अच्छी मानी जा रही है। अगर अब बारिश होती है तो यह फसल के लिए सोने पर सुहागा होगी। वहीं अगर मौसम ऐसा ही रहा और सूर्य देवता के प्रतिदिन दर्शन नही हुए तो गेहूं पीली पडनी शुरू हो जाएगी। नागरिक अस्पताल के डिप्टी एमएस डा. राजेश भोला ने बताया कि जिस तरह से इस समय मौसम प्रतिदिन करवट ले रहा है, वो बीमारियों के अनुकूल है। ऐसे में बच्चों तथा वृद्धों की स्पेशल देखभाल की जरूरत है। घर से निकलते हुए गरम कपड़े अवश्य पहनें। छोटे बच्चों को खुले में न आने दें। हीटर, अंगीठी, ब्लौर या अन्य गरम उपकरणों का ज्यादा प्रयोग न करें। गरम पानी समय-समय पर पीते रहें।

राजौंद। खेतों में लहराती हुई गेहूं की फसल का दृश्य। फोटो : हरिभूमि

ठंड से मिली निजात

राजौंद। शनिवार को सुबह ही सूर्य देव ने दर्शन दिए। जिससे लोगों को ठंड से काफी राहत मिली। ठंड से गेहूं की फसल में अच्छा खासा लाभ बना हुआ है। पिछले 15 दिनों से गेहूं के पौधे में अच्छी ग्रोथ देखने को मिली है। पिछले दो दिनों से कुछ समय के लिए धूप निकल रही है। लेकिन ठंडक से राहत नहीं मिलती। शनिवार को सुबह-सुबह सूर्य देवता ने आसमान पर लोगों को दर्शन दिए तो देखते-देखते तेज धूप निकली। जिससे वातावरण गर्म हुआ और लोगों को कुछ हद तक ठंड से काफी राहत मिली। वहीं बाजारों में भी लोगों की चहल-पहल देखने को मिली। उधर किसानों का कहना है की यह मौसम गेहूं की फसल के लिए बिल्कुल अनुकूल बना हुआ है और इस बार बंपर पैदावार होने की उम्मीद है। राजौद खंड कृषि अधिकारी डा. हरमीत सिंह ने बताया कि मौसम में ठंडक गेहूं फसल के लिए बहुत फायदेमंद है किसान लगातार अपने खेतों का दौरा करते रहें।

'पहला कदम फाउंडेशन' ने मनाया विश्व हिंदी दिवस, रखे विचार

■ हर व्यक्ति को अपने देश और संस्कृति से प्रेम होना चाहिए

हरिभूमि न्यूज ▶▶ जींद

जींद। कार्यक्रम में भाग लेते हुए राजेश वशिष्ठ। फोटो : हरिभूमि

पहला कदम फाउंडेशन ने अपने कार्यालय में विश्व हिंदी दिवस बड़े उत्साह और गरिमा के साथ मनाया। इस अवसर पर आयोजित विशेष कार्यक्रम में शिक्षाविदों, समाजसेवियों और फाउंडेशन के पदाधिकारियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम का उद्देश्य हिंदी भाषा के महत्व, उसके प्रचार-प्रसार और समाज में उसकी भूमिका पर चर्चा करना था। कार्यक्रम की अध्यक्षता फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजेश वशिष्ठ ने की। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि हर व्यक्ति को अपने देश और उसकी संस्कृति से प्रेम होना चाहिए, और उस प्रेम का सबसे बड़ा प्रतीक उसकी मातृभाषा होती है। उन्होंने कहा कि किसी भी देश की वास्तविक प्रगति उसकी निज भाषा में ही संभव है। यदि हम अपनी भाषा को भूल जाएंगे, तो अपनी संस्कृति और पहचान से भी दूर हो जाएंगे। इसलिए हिंदी के प्रचार-प्रसार में हर नागरिक को सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।

राजेश वशिष्ठ ने यह भी कहा कि हिंदी केवल एक भाषा नहीं बल्कि भारतीयता की आत्मा है।

उचाना खुर्द में 18 जनवरी को होगी देशभक्त किसान चौपाल : सतीश

■ कहा : किसानों से सीधा संवाद, समाधान और सशक्तिकरण पर रहेगा फोकस

हरिभूमि न्यूज ▶▶ उचाना

सतीश जांगड़ा मंडलध्यक्ष।

भाजपा उचाना मंडलध्यक्ष सतीश जांगड़ा ने बताया कि भाजपा किसानों की समस्याओं का समाधान सुनिश्चित करने तथा उन्हें सरकारी योजनाओं से जोड़ने के उद्देश्य से देशभक्त किसान चौपाल का आयोजन कर रही है। 18 जनवरी को उचाना खुर्द गांव में इसका आयोजन होगा। विधायक देवेंद्र चतरभुज अत्री, जिलाध्यक्ष तेजेंद्र ढूल, जिला प्रभारी मदनलाल गोयल मुख्य रूप से पहुंचेंगे।

जांगड़ा ने कहा कि इस अभियान के अंतर्गत किसानों के साथ सीधा संवाद किया जाएगा ताकि खेती और किसानों से जुड़े वास्तविक मुद्दों पर सार्थक चर्चा हो सके। चौपाल में किसान न्यूनतम समर्थन मूल्य, खाद-बीज बढ़ती लागत, बिजली व सिंचाई व्यवस्था, फसल बीमा, प्राकृतिक आपदाओं से फसल नुकसान, पशुपालन एवं डेयरी से संबंधित समस्याएं सीधे पार्टी नेतृत्व के समक्ष रख सकेंगे। चौपाल अभियान का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य किसानों को केंद्र व राज्य सरकार की किसान हितैषी योजनाओं जैसे प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, मृदा स्वास्थ्य कार्ड, किसान क्रेडिट कार्ड, प्राकृतिक खेती एवं फसल विविधीकरण की जानकारी देना तथा पात्र किसानों को इन योजनाओं से जोड़ना भी है।

उन्होंने कहा कि किसान चौपाल अभियान केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि किसानों के साथ निरंतर संवाद और समयबद्ध समाधान की प्रक्रिया है।

किसानों व कमेरे वर्ग के मसीहा थे दीनबंधु छोटू राम : राजकुमार

■ जाट शिक्षण संस्थान में प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी गई

हरिभूमि न्यूज ▶▶ कैथल

कैथल। जाट शिक्षण संस्थान के पदाधिकारी सर छोटू राम को याद करते हुए। फोटो : हरिभूमि

दीनबंधु सर छोटू राम की पुण्यतिथि पर जाट शिक्षण संस्थान में रहबरे आजम दीनबंधु सर छोटू राम की प्रतिमा पर जाट हाई स्कूल सोसाइटी पदाधिकारी, प्राचार्य व स्टाफ सदस्यों द्वारा पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी गई।

इस अवसर पर जाट हाई स्कूल सोसाइटी के प्रधान राजकुमार बैनिवाल ने दीनबंधु सर छोटू राम को याद करते हुए कहा की सर छोटू राम सर्व समाज के लिए आदर्श रहे हैं व हमेशा रहेंगे उन्होंने सर्व समाज की भलाई के लिए जीवन पर्यंत कार्य किया। किसानों को साहूकारों से कर्ज मुक्ति के लिए कानून बनवाए, आम वर्ग के लोगों में जागृति लाने के लिए शिक्षा के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। यही कारण है कि समाज का हर वर्ग सम्मान भाव के साथ उन्हें याद करता है। इस अवसर पर उन्होंने दीनबंधु सर छोटू राम के आदर्शों व उनके दिखाएं मार्ग पर चलने का आह्वान किया।

भाजपा शासन के 11 सालों ने युवाओं के सपनों को लूटा : रणदीप सुरजेवाला

■ गांव जांबा में किया युवा मिलन समारोह का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ पूंडरी

पूंडरी। सांसद रणदीप सिंह सुरजेवाला का गांव जांबा में स्वागत करते ग्रामीण।

पूंडरी हल्के के गांव जांबा में युवा कांग्रेस नेता जस्सा जांबा द्वारा 'युवा मिलन समारोह' आयोजित किया गया। जिसमें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस महासचिव एवं सांसद रणदीप सिंह सुरजेवाला ने बतौर मुख्यातिथि शिरकत की। बड़ी संख्या में जुटे युवाओं को संबोधित करते हुए सुरजेवाला ने केंद्र और राज्य की भाजपा सरकार पर पिछले 11 वर्षों में युवाओं के साथ हुए अन्याय को लेकर तीखी आलोचना की। उन्होंने इसे भाजपा का 'विकसित हरियाणा' नहीं, बल्कि 'बर्बाद हरियाणा' करार दिया।

सुरजेवाला ने कहा कि भाजपा सरकार ने युवाओं को क्या दिया? जवाब में उन्होंने तीन प्रमुख मुद्दों पर विस्तार से प्रकाश डाला – नशे का सैलाब, बेरोजगारी की आग और विदेश पलायन की मजबूरी। उन्होंने आरोप लगाया कि इन 11 सालों में भाजपा ने युवाओं के सपनों को लूटा, ठगा और पूरी तरह बर्बाद कर दिया है। सुरजेवाला ने कहा कि गांव-शहर, गलियां-स्कूल, बस स्टैंड तक ड्रग्स पहुंच गया है। नशा अब सिर्फ शहरों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि ग्रामीण इलाकों में भी घर-घर पहुंच चुका है।

डीएवी बॉक्सिंग चैंपियनशिप में दो खिलाड़ियों ने जीते मेडल

■ हर्ष ढांडा ने रजत पदक और मैक दुल ने सिल्वर मेडल जीतकर नाम किया रोशन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ कैथल

कैथल। बाक्सिंग कोच गुरमीत सिंह खिलाड़ियों को सम्मानित करते हुए।

हरिद्वार में हुई डीएवी बॉक्सिंग नेशनल चैंपियनशिप में आरकेएसडी स्टेडियम बॉक्सिंग सेंटर कैथल से दो खिलाड़ियों ने जीते पदक। गुरमीत सिंह बॉक्सिंग कोच ने बताया कि सेंटर से दो खिलाडी प्रतियोगिता में खेलने गए थे जिसमे हर्ष ढांडा -80 किलोग्राम मे रजत पदक जीत और मैक दुल -30 किलोग्राम बजन मे सिल्वर मेडल जीता। दोनों खिलाडी ओ एस डी ए वी, कैथल के छात्र है।

दोनो खिलाडी सुबह शाम स्टेडियम मे बॉक्सिंग नर्सरी में अभ्यास करते है। इस उपलब्धि के लिए जिला खेल अधिकारी राज रानी, राजेंद्र बॉक्सिंग कोच, विक्रम दुल डीपी,संदीप डीपी, मनोज कुमार, राजकमल ढांडा, सुनील डीपी, मोहिंदर पी टी आई, रंधीर ढांडा,अशोक शर्मा, हरिओम शर्मा,अनूप धीमान, परशोत राय, अमरजीत इंदिरा, गुरनाम ने खिलाड़ियों को बधाई दी।

आवक बढ़ने से सब्जियों के दाम लुढ़के

राजौंद। सर्दियों के इस मौसम में सब्जियों की आवक बढ़ने से सब्जियों के दामों में काफी उतार आया है। जिससे गृहणियों के रसोई के बजट में काफी सुधार हुआ है। इन दिनों मार्केट में मटर के भाव 20 रुपये प्रति किलो हरी मिर्च 50 रुपये, गाजर 15 रुपए प्रति किलो, गोभी 10 रुपए प्रति किलो टमाटर 50 रुपये प्रति किलो, खीरा 30 रुपये किलो अदरक 80 से 100 रुपए किलो तक बिक रहा है, आलू 10 रुपए प्रति किलो प्याज 20 रुपए प्रति किलो तक बिक रहा है। इसके अलावा दूसरी सब्जियों की कीमतों में काफी उतार चढ़ाव हो रहा है।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हुड्डा कॉम्पलेक्स, डी.आर.डी.ए. के सामने, जीन्द
हरिभूमि कार्यालय, करनाल रोड, जाट स्टेडियम के सामने, कैथल
फोन : 8295157800, 8814999186, 8814999166, 9253681005

सहयोग देने के लिए ग्राम पंचायत मांझला का जताया आभार

सौंदर्यीकरण प्रतियोगिता में राजकीय पाठशाला प्रथम

अधिकारियों ने विद्यालय परिवार को बधाई दी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सीवन

सीवन। सीवन के गांव मांझला के स्कूल का दृश्य। फोटो :हरिभूमि

मुख्यमंत्री स्कूल सौंदर्यकरण की खंड स्तरीय प्रतियोगिता में राजकीय प्राथमिक पाठशाला मांझला ने शानदार प्रदर्शन करते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

इस उपलब्धि से विद्यालय परिवार सहित पूरे गांव में खुशी का माहौल बना हुआ है। विद्यालय के मुख्य शिक्षक अनिल शर्मा ने जानकारी देते हुए बताया कि खंड स्तर पर आयोजित इस प्रतियोगिता में सभी विद्यालयों को पीछे छोड़ते हुए राजकीय प्राथमिक पाठशाला मांझला ने प्रथम स्थान हासिल किया। प्रतियोगिता के दौरान विद्यालय में बच्चों के बैठने की व्यवस्था, स्वच्छ पेयजल सुविधा, साफ-सुथरे शौचालय, हरित वातावरण, किचन गार्डन, विद्यालय परिसर की सुंदरता एवं शैक्षणिक वातावरण जैसे विभिन्न बिंदुओं पर मूल्यांकन किया गया, जिसमें विद्यालय ने उत्कृष्ट अंक प्राप्त किए। अनिल शर्मा ने इस सफलता का श्रेय विद्यालय स्टाफ, विद्यार्थियों और अभिभावकों के सामूहिक प्रयासों को देते हुए कहा कि सभी के सहयोग से यह उपलब्धि संभव हो सकी। उन्होंने विद्यालय के विकास में निरंतर सहयोग देने के लिए ग्राम पंचायत मांझला एवं सरपंच माया कौर का विशेष रूप से धन्यवाद किया। विद्यालय की इस सफलता पर एसएमसी प्रधान गुरविंदर सिंह, समाज सेवी बलविंदर सिंह, विनोद कुमार, जगरूप सिंह, परमजीत सिंह, अमरीक सिंह, महिमा सिंह सहित ग्रामीणों, अभिभावकों तथा शिक्षा विभाग के अधिकारियों ने विद्यालय परिवार को बधाई दी।

इनका रहा सहयोग

इसके साथ ही मुख्य शिक्षक ने कहा कि इस प्रतियोगिता में सफलता दिलाने में खंड शिक्षा अधिकारी अनिल छाबड़ा का मार्गदर्शन और सहयोग सबसे अधिक रहा। उन्होंने शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने और विद्यालयों के सर्वांगीण विकास के लिए निरंतर प्रेरणा दी, जिसके परिणामस्वरूप विद्यालय को यह सम्मान प्राप्त हुआ। अब यह स्कूल जिला स्तरीय प्रतियोगिता में भाग लेगा।

अवैध कॉलोनियों में न खरीदें जमीन

जींद। जिला नगर योजनाकार मनीष दहिया ने बताया कि शहरी क्षेत्र में कुछ अनधिकृत कालोनियों का विकास बिना विभाग से आवश्यक लाइसेंस, सीएलयू एवं एनओसी प्राप्त किए किया जा रहा है, जो नियमानुसार पूरी तरह से अवैध है। दोषियों के विरुद्ध विधि अनुसार कार्रवाई भी अमल में लाई जा रही है। शहरी क्षेत्र जींद के राजस्व एस्टेट जींद के खसरा नंबर 214//16,25, 230//1, 2, 7, 8, 9, 10, 13, 14, 17/1 और 231//5 में अवैध रूप से विकसित किए जा रहे भूखंडों, प्लाटों के संबंध में किसी भी प्रकार का विक्रय विलेख, विक्रय समझौता, पूर्ण भुगतान समझौता अथवा पावर ऑफ अटॉर्नी का पंजीकरण न करने की अपील की गई है।

भारतीय सांस्कृतिक विरासत को मिली वैश्विक पहचान

पिछला साल भारतीय कला, साहित्य व संस्कृति के लिए बहुत महत्वपूर्ण और उत्साहवर्धक रहा। साल के शुरुआत में यूनेस्को ने भारत के दो प्राचीन ग्रंथों 'श्रीमद्भगवद्गीता' और 'नाट्यशास्त्र' को मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड रजिस्टर में शामिल किया, जोकि भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत को वैश्विक पहचान व मान्यता देता है। वहीं साल के अंतिम महीने में यूनेस्को ने भारत के प्रमुख पर्व दीपावली को अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सूची में शामिल किया। ये उपलब्धियां भारत की कला, आध्यात्मिक व सांस्कृतिक विरासत को विश्व में एक विशेष स्थान व मान्यता प्रदान करती हैं। कला-संस्कृति से जुड़े दिग्गज, बता रहे हैं वे इस उपलब्धि को किस तरह देखते हैं?

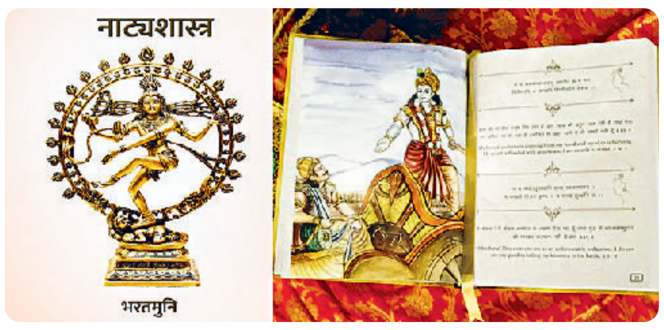

आवरण कथा

यह देश के लिए सांस्कृतिक पुनर्जागरण का ऐतिहासिक क्षण है

डॉ. संध्या पुरेचा अध्यक्ष-संगीत नाटक अकादमी

यूनेस्को द्वारा प्राचीन ग्रंथों 'नाट्यशास्त्र' और 'श्रीमद्भगवद्गीता' का पंजीकरण तथा दीपावली का भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में घोषित होना, भारत के लिए अत्यंत गौरव, आत्म-सम्मान के साथ ही सांस्कृतिक पुनर्जागरण का ऐतिहासिक क्षण है। यह केवल अंतरराष्ट्रीय मान्यता नहीं बल्कि भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा, दार्शनिक दृष्टि और जीवन मूल्यों की वैश्विक स्वीकृति है।

'नाट्यशास्त्र' भारतीय कलाओं की आत्मा है। यह रंगमंच, नृत्य और संगीत का शास्त्र होने के साथ-साथ मानव भावनाओं, रस अभिव्यक्ति और सौंदर्यबोध का वैज्ञानिक और सार्वकालिक ग्रंथ है। वहीं 'श्रीमद्भगवद्गीता' कर्म, धर्म, भक्ति और ज्ञान के माध्यम से मानव जीवन के लिए एक सार्वभौमिक दर्शन प्रस्तुत करती है। इन दोनों ग्रंथों को यूनेस्को में स्थान मिलना यह सिद्ध करता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा आज भी संपूर्ण मानवता के लिए प्रासंगिक और मार्गदर्शक है। दीपावली का अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में मान्यता पाना भारत की लोक-आस्थाओं और सांस्कृतिक चेतना की वैश्विक स्वीकृति है। यह पर्व केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं बल्कि सामाजिक एकता, नैतिक मूल्यों, आशा और सद्भाव का उत्सव है, जो संपूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में बांधता है और मानवता को सकारात्मक ऊर्जा का संदेश देता है। इन उपलब्धियों का भारत की सांस्कृतिक कूटनीति, कला, शिक्षा, अनुसंधान, पर्यटन तथा परंपरागत ज्ञान के संरक्षण और संवर्धन पर दूरगामी प्रभाव होगा। इससे हमारी युवा पीढ़ी अपनी जड़ों से जुड़ने के साथ-साथ भारतीय संस्कृति के वैश्विक महत्व को भी समझ सकेगी। संगीत नाटक अकादमी भी इस दिशा में सतत प्रयास करेगी कि हमारी परंपराएं जीवंत बनी रहें, अगली पीढ़ियों तक पहुंचे और वैश्विक मंच पर गरिमापूर्ण ढंग से प्रस्तुत हों। *

भारतवासियों के लिए विश्वस्तर की यह बड़ी उपलब्धि है

रोहित त्रिपाठी अभिनेता-निर्देशक, अध्यक्ष-अपस्टेज आर्ट ग्रुप

नाट्यशास्त्र को यूनेस्को मेमोरी ऑफ वर्ल्ड रजिस्टर में शामिल करना दर्शाता है कि हमारा नाट्यशास्त्र प्राचीन नाट्यमंच पद्धति है। पूरे विश्व में यह स्वीकारोक्ति हुई है कि नाट्यशास्त्र वह ग्रंथ है, जिसमें हमें मंच पर प्रस्तुत करने की सारी विधाएं प्राचीन काल से बताई गई हैं। इसे अब यानी लंबे इंतजार के बाद वर्ल्ड रजिस्टर में शामिल किया गया, जबकि यह काम बहुत पहले हो जाना चाहिए था। विश्व की यह स्वीकारोक्ति हमें बताती है कि विश्व के जितने भी महान रंगकर्मी हुए, उन्होंने कहीं न कहीं हमारे नाट्यशास्त्र से गहन अध्ययन किया और अपनी एक थ्योरी बनाकर प्रकाशित की। यह बहुत खुशी की बात है कि अभी हाल ही में दीपावली को अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के रूप में शामिल किया गया। इससे प्रतीत होता है कि हमारी सनातन परंपरा और उसके उत्सव विश्व को आगे ले जाने में कितनी मदद करते हैं। यह हम रंगकर्मियों के लिए भारतवासियों के लिए विश्वस्तर की एक बड़ी उपलब्धि है। स्वामी विवेकानंद ने इसीलिए कहा था कि समस्त विश्व के लोग हमारे भाई-बहन हैं। हम विश्व के कल्याण के लिए काम करते हैं। यह हम सभी रंगकर्मियों के लिए गर्व की बात है कि हमारे पास नाट्यशास्त्र है। बस उसे सरलतम बनाकर प्रस्तुत करने के लिए हमारे देश के विद्वानों को आगे आना चाहिए ताकि हर रंगकर्मी तक वह उनकी सरल भाषा में पहुंच सके। वे उसे समझकर अपना ज्ञानवर्धन कर सकें। *

ये उपलब्धियां हासिल होना हर भारतीय के लिए गौरव का पल है

पद्मश्री डॉ. भरत गुप्त
कार्यकारी उपाध्यक्ष-एनएसडी

'श्रीमद्भगवद्गीता' व 'नाट्यशास्त्र' को यूनेस्को द्वारा मेमोरी ऑफ वर्ल्ड रजिस्टर में शामिल किया जाना, हर भारतीय के लिए गौरव का पल है। 'श्रीमद्भगवद्गीता' एक प्राचीन ग्रंथ है, जिसे सदियों से खूब पढ़ा जा रहा है। 'नाट्यशास्त्र' को लेकर मुझे विशेष प्रसन्नता है, क्योंकि पश्चिम के लोग अभी भी इस बात को नहीं जानते कि 'नाट्यशास्त्र' रंगमंच की व्याख्या है और इतनी व्यापक व्याख्या और कहीं नहीं है। बेशक कुछ पश्चिम के लोग नाट्यशास्त्र के विषय में जानते हैं लेकिन अब और विदेशी इसे पढ़ेंगे। दोनों ग्रंथों को मेमोरी ऑफ वर्ल्ड रजिस्टर में रखवाने में आईजीएनसीए की बड़ी भूमिका रही। मैं आईजीएनसीए में ट्रस्टी हूं, हमारी पूरी टीम इस काम में लगी थी।

'श्रीमद्भगवद्गीता' दर्शन का ग्रंथ है, जिसमें कर्म, योग, ज्ञान और भक्ति की व्याख्या है। जीवन में क्या करना है, जीवन कैसे, किन मूल्य को लेकर जीना है, आप कैसे कर्म करेंगे? यह हमें गीता सिखाती है। इस तरह 'श्रीमद्भगवद्गीता' एक योद्धा की किताब है। उस योद्धा की मानसिकता की मनोदशा, हम सभी की जिंदगी में कभी न कभी किसी न किसी रूप में आती रहती है। गीता हमें सिखाती है कि श्रेष्ठ जीवन कैसा हो? जीवन जैसा भी है, अच्छा, बुरा, कुछ ऊंचे पात्र, कुछ नीचे, नायक, खलनायक इन सबको दिखाने वाला ग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' है। गीता के संदेश को हम बच्चे से लेकर बुजुर्गों तक नाटक के माध्यम से पहुंचा सकते हैं। इन ग्रंथों को जनता तक पहुंचाना बहुत जरूरी है।

दीपावली के संदर्भ में यही कहूंगा कि यूनेस्को ने इसे सांस्कृतिक धरोहर माना है। यह गर्व की बात है लेकिन अब हमें देखना होगा कि क्या हम दीपावली को उसके मूल स्वरूप में मना रहे हैं? साथ ही विजया दशमी के महत्व को समझें, तभी दीपावली का सही अर्थ समझ आएगा। *

हम सांस्कृतिक पुनर्जागरण का युग देख रहे हैं

डॉ. सच्चिदानंद जोशी सदस्य सचिव-इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र

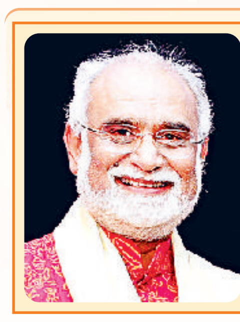

हम सांस्कृतिक पुनर्जागरण का युग देख रहे हैं। स्वतंत्रता से पूर्व हम गुलाम मानसिकता में जीते रहे इसलिए हमें हमारी सांस्कृतिक विरासत व वैभव का अहसास नहीं हुआ। हमारी अस्मिता बोध को जगाने का काम इस समय हो रहा है। यह निरंतर प्रक्रिया चल रही है। विरासत भी विकास भी, का मंत्र लेकर हम आगे बढ़ रहे हैं। इस दृष्टि से देखें तो पिछला एक साल उसी निरंतर किए जा रहे कार्यों का गौरवशाली साल रहा। पहले हमने 'नाट्यशास्त्र' व 'श्रीमद्भगवदगीता' को यूनेस्को मेमोरी ऑफ वर्ल्ड रजिस्टर में दर्ज कराया। यह इस बात को रेखांकित करता है कि हमारी परंपराएं कितनी पुरानी हैं, हमारी सांस्कृतिक जड़ें कितनी गहरी हैं। श्रीमद्भगवद्गीता को काफी पहले से ही विश्वभर में बहुत आदर, सम्मान के साथ पढ़ा जाता रहा है। अब जब हमारा नाट्यशास्त्र वर्ल्ड रजिस्टर में शामिल होता है तो हमें पूरे विश्व को यह बताने का अवसर मिलता है कि ऐसा शास्त्र हमारे यहां दो हजार साल पूर्व लिखा गया। तब जबकि विश्व की अधिकांश सभ्यताएं इस पूरे शास्त्र के बारे में जानती भी नहीं थीं। इस दृष्टि से यह बहुत महत्वपूर्ण है। दीपावली का अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर में शामिल होना, हमें विश्व को यह बताने का अवसर देता है कि हमारे देश में पर्व मनाने की निरंतरता कितनी बड़ी है। साथ ही यह भी कि हमारे पर्व किस तरह से सर्वसमावेशी हैं। हमने किस तरह अपनी पुरातन परंपराओं को मान्यताओं को बचाकर रखा है और आगे तक बचाने का संकल्प किया है। इस तरह विश्वस्तर पर ये तीनों उपलब्धियां हमारे लिए बहुत मायने रखती हैं। *

प्रस्तुतिः रेनू खंतवाल

विशेषः राष्ट्रीय युवा दिवस, 12 जनवरी

स्वामी विवेकानंद ने न केवल भारत की सांस्कृतिक श्रेष्ठता को संपूर्ण विश्व में प्रतिष्ठित किया, यहां की धार्मिक चेतना का पुनर्जागरण करने में भी भूमिका निभाई। यही नहीं लगभग सवा सदी से अधिक समय गुजरने के बाद भी स्वामी विवेकानंद, देश के युवाओं के लिए आदर्श और अद्वितीय मार्गदर्शक बने हुए हैं।

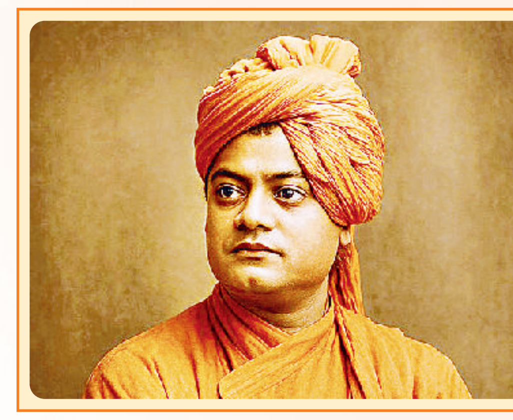

स्वामी विवेकानंद आज भी हैं युवाओं के आदर्श-मार्गदर्शक

प्रेरक व्यक्तित्व

शिखर चंद जैन

ब्रिटिश शासनकाल के समय पश्चिमी देश, भारत की उपेक्षा किया करते थे। दरअसल, वे हमारे देश की अद्वितीय सनातन संस्कृति और गौरवमयी सभ्यता से परिचित ही नहीं थे। ऐसे समय में 12 जनवरी 1863 को जन्मे स्वामी विवेकानंद (बचपन का नाम नरेंद्र) ने युवावस्था में ही दुनिया में भारतवर्ष का मान बढ़ाने में अभूतपूर्व भूमिका निभाई।

भारतीय संस्कृति को दिलाया मानः स्वामी विवेकानंद, भारत के पहले युवा संत थे, जिन्होंने सनातन धर्म का संदेश विश्व भर में फैलाया और इसकी महत्ता पूरे विश्व को समझाई। उन्होंने विश्व में सनातन मूल्यों, धर्म और भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता को स्थापित किया और इसका मान बढ़ाया। 11 सितंबर, 1893 को अमेरिका स्थित शिकागो में आयोजित विश्व धर्म संसद में उनके भाषण ने दुनिया भर के धार्मिक और आध्यात्मिक संतों पर एक अमिट छाप छोड़ी। उन्होंने अपने उद्बोधन की शुरुआत जब 'मेरे प्यारे अमेरिकी बहनों और भाइयों' से की तो पूरा हाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। इस पर उन्होंने कहा, 'जिस गर्मजोशी और सौहार्दपूर्ण माहौल में मेरा स्वागत किया है, उससे मेरा हृदय गद-गद है। भारत भूमि के सभी समुदायों, वर्गों, लाखों-करोड़ों भारतीयों की तरफ से मैं आपको कोटि-कोटि धन्यवाद देता हूं।' उन्होंने यह भी कहा, 'मुझे उस धर्म व राष्ट्र से संबंध रखने पर गर्व है, जिसने दुनिया को सहिष्णुता और सार्वभौमिकता का पाठ सिखाया। हम न केवल सार्वभौमिक सहनशीलता में विश्वास रखते हैं बल्कि सभी धर्मों को सत्य के रूप में स्वीकार करते हैं। मुझे भारतीय होने पर गर्व है, जिसने विभिन्न राष्ट्रों के पीड़ितों और शरणार्थियों को आश्रय दिया है।'

धार्मिक सहिष्णुता के पक्षधरः भारतीय संस्कृति के मूल भाव धर्मनिरपेक्षता को वे बहुत महत्वपूर्ण मानते थे। उन्होंने सदैव सार्वजनिक संस्कृति के रूप में धार्मिक सहिष्णुता का समर्थन किया, क्योंकि वे सद्भाव और शांति के पक्षधर थे। स्वामीजी, जाति या धर्म के आधार पर बिना किसी भेदभाव के लोगों की सेवा करने को सर्वश्रेष्ठ मानव धर्म मानते थे। उनके विचारों में धर्मनिरपेक्षता के संबंध में तुष्टिकरण के लिए कोई स्थान नहीं था। 1893 में विश्व धर्म संसद में ऐतिहासिक व्याख्यान देने के बाद उन्होंने यूरोप का भी दौरा किया। स्वामी विवेकानंद ने देश की महान आध्यात्मिक विरासत को आगे बढ़ाते हुए एकता की भावना को प्रसारित किया।

मातृभूमि के प्रति अगाध श्रद्धाः स्वामीजी जब अमेरिका और ब्रिटेन की यात्रा कर चार साल बाद भारत लौटे तो उन्होंने यहां की पवित्र भूमि को साष्टांग दंडवत कर नमन किया। उनके मन में मातृभूमि के प्रति अपार श्रद्धा और प्रेम था। वे कहते थे कि मातृभूमि का कण-कण पवित्र और प्रेरक होता है, इसलिए इस धूलि में रमा हुआ हूं।

परम विद्वान-विनम्र व्यक्तित्वः स्वामी विवेकानंद के बारे में नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने लिखा है, 'स्वामीजी इसलिए महान हैं कि उन्होंने पूर्व और पश्चिम, धर्म और विज्ञान, अतीत और वर्तमान में सामंजस्य स्थापित किया, देशवासियों ने उनकी शिक्षाओं से अभूतपूर्व आत्म-सम्मान, आत्मनिर्भरता और आत्म-विश्वास आत्मसात किया है।' इसी ऐतिहासिक संबोधन से प्रभावित होकर प्रख्यात ब्रिटिश इतिहासकार ए.एल. बाशम ने कहा था, 'स्वामी विवेकानंद जी को भविष्य में आधुनिक दुनिया के प्रमुख निर्माता के रूप में हमेशा याद किया जाएगा।'

युवाओं के प्रेरणास्रोतः स्वामी विवेकानंद मानते थे कि युवाशक्ति ही देश, समाज और दुनिया को सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ा सकती है। उन्होंने युवाओं को प्रेरित करते हुए कहा था 'उठो, जागो और तब तक मत रुको, जब तक मंजिल प्राप्त न हो जाए।' वे युवाओं से भरपूर आशा और उम्मीद रखते थे। उनके लिए युवा पीढ़ी ही परिवर्तन की अग्रदूत हो सकती है। वे चाहते थे कि युवाओं में विशाल हृदय के साथ मातृभूमि और जनता की सेवा करने की दृढ़ इच्छा शक्ति हो। वे युवाओं का आह्वान करते हुए कहते थे, 'देश में जहां भी प्लेग या अकाल का प्रकोप है, या जहां भी लोग संकट में हैं, आप वहां जाएं और उनके दुःखों को दूर करें। आप पर देश के भविष्य की उम्मीदें टिकी हुई हैं।'

स्वामी विवेकानंद, आधुनिक भारत के उन महानतम आध्यात्मिक गुरुओं और विचारकों में से एक थे, जिन्होंने न केवल भारतीय संस्कृति का विश्व भर में गौरव बढ़ाया, बल्कि युवाओं को ऊर्जा, आत्मविश्वास और चरित्र-निर्माण का एक नया मार्ग भी दिखाया। स्वामी जी का दर्शन और आदर्श भारतीय युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत आज भी बना हुआ है। स्वामी विवेकानंद के सुझाए रास्ते पर चलकर ही एक भारत-श्रेष्ठ भारत, आत्म-निर्भर भारत और भारत को विश्व गुरु बनाने का सपना साकार किया जा सकता है। *

कविता

अवतार सिंह अक्षरजीवी

आगाह

ऐसा नहीं है कि आकर्षण नहीं है
मेरी आंखों में किसी के लिए,
ऐसा भी नहीं है कि मैं कह दूं कि
मेरी भावनाएं मुझे शून्य मानती हैं,
बहुत प्रेम कर लेने के बाद
प्रेम करने का जी नहीं करता
मेरा मन इस तरह का उदार भी नहीं है,
फिर क्या सत्य है?
जो प्राप्त है, उसे पाने के बाद से
लगातार खोते चले जाना
भव्यता से खंडहर हो जाना
भरी-पूरी झील से कीचड़ हो जाना
सुर मिलना, अंत में एकाकी रह जाना
मुझे प्रेम के प्रति आगाह करता है-
प्रेम को पा लेना
प्रेम के समापन की लंबी यात्रा है,
प्रेम को न पाना
प्रेम करते चले जाने की निष्क्रियता है।

व्यंग्य

भूपेंद्र भारतीय

जैसे चुनावों के समय कुछ कार्यकर्ता नि:स्वार्थ भाव से दल की सेवा करते हैं और चुनाव जीतने के बाद मेवा किसी और के हाथ लगता है। उसी तरह आखिर में मंगल जैसों की थाली में सिर्फ पतला तरीनुमा पानी रह जाता है।

तपेली में तरी ही बची

मंगल के साथ पिछले दिनों बड़ा धोखा हो गया। धोखा क्या कहूं, मंगल की भाषा में यह एक तरह से 'सेवा का शिकार' होने जैसा है। या कहें, ये वही धोखा था, जो एक आम राजनीतिक कार्यकर्ता के साथ चुनाव के बाद जीतने वाला दल करता है। वैसे ही जैसे बड़े बाबू, चपरासी और कार्यालय के अन्य छोटे बाबुओं के साथ करते हैं, रिश्वत में आया अधिकांश माल बड़े बाबू निगल लेते हैं और अन्य के पास सिर्फ पतली तरी बचती है। सिर्फ दाल का पानी ही पानी, फिर उस तपेली में चम्मच हिलाते रहो। ऐसा ही पिछले दिनों मंगल के साथ हुआ। वह पिछले दिनों अपनी जाति के प्रतिभा सम्मान आयोजन में गया था, जिसे बड़ी होशियारी से समाजवादी ढंग में सामाजिक आयोजन कहा गया था। पहले आयोजन में सामाजिक नेताओं के द्वारा भाषणबाज प्रतिभाओं को जैसे जबरन पकड़कर सम्मानित किया गया हो। उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए जातिगत नेताओं द्वारा दो शब्द कहे गए। वे दो शब्द स्वयं की प्रशंसा में ज्यादा थे।

मंगल इस आयोजन में कार्यकर्ता की भूमिका में था। उसे किसी ने बोला नहीं था। ना ही चुनावी उम्मीदवारों की सूची जैसी किसी सूची में उसका नाम था और ना ही इसके लिए उसने कोई याचिका लगाई थी। वह भावुकता में चला गया। उसे सेवा करने का भी कुछ मन हुआ था। जैसे आजकल सब तरफ सेवा के लिए लोग जाते हैं। नेतागण देश की सेवा के लिए पागल हो रहे हैं। युवा अलग तरह से सेवा करना चाहता है। जैसे राष्ट्रीय स्तर पर इस देश का युवा 'देश सेवा' के लिए गलाकाट प्रतियोगी परीक्षा पास करता है और फिर कुछ ही वर्षों में सेवा के नाम पर भ्रष्टाचार के मामलों से देश के अखबारों में बड़ी-बड़ी हेडलाइन बनाता है। वहीं संसदीय और विधायी समितियों में जनप्रतिनिधि देश सेवा व नवाचार के नाम पर चार-पांच देशों की यात्रा करते हैं और जनप्रतिनिधि होने का कर्त्तव्य निभाते हैं। वैसे ही मंगल भी उस आयोजन में सेवा के लिए चला गया। जैसे युवा शुरू-शुरू में राजनीतिक-सामाजिक आंदोलनों में जाता है और भीड़ का शिकार हो या तो भावुकता में अपने हाथ-पैर तुड़वा लेता है या फिर पुलिस थाने के रजिस्टर में अपना नाम दर्ज कराकर राजनीति का स्थाई खिलाड़ी बन जाता है।

मंगल को भी लगा कि बड़े आयोजन में उसके हाथ कुछ तो आएगा। उसके जीवन में भी कुछ मंगल हो जाएगा। जैसे कर्मठ कार्यकर्ताओं की सेवा से मंत्रीजी जनसेवा करते हैं। उसे भी नेतृत्व की अग्रिम पंक्ति में आने का रोग चढ़ा। उसे भी लगा, समाज सेवा करने पर गाढ़ी तरी व साग दोनों का आनंद मिलेगा। वह भी अब नया कुर्ता-पायजामा पहनकर समाज सेवा की तपेली में अपनी सेवा रूपी चम्मच हिलाने गया था। उसने पढ़ा था, इस सेवा के लिए आजादी से पूर्व और उसके बाद बड़े-बड़े लोग, अपनी जमी-जमाई वकालत, व्यापार, जागीरदारी आदि छोड़कर इस सेवा में कूद पड़े थे। तो भला मंगल अपने समाज के आयोजन में टाट-पट्टी बिछाने से लेकर भोजन परोसने तक का काम क्यों नहीं कर सकता? आगे मंच और माइक भी मिलेगा। पूर्व में तो उसके जैसे कार्यकर्ताओं द्वारा समाज सेवा के लिए प्राण तक न्यौछावर कर दिए। क्या उन्होंने कम तरी-साग का आनंद उठाया? कैसे मालामाल हो गए! जैसे वे इस सेवा के लिए ही बने हों।

मंगल की मानें तो उस आयोजन में वह समाज सेवा के भाव से गया था। लेकिन उसका भाव वही था, जो अधिकांश सामाजिक संगठनों का रहता है। समाज में दबे-कुचले लोगों की सेवा के नाम पर सरकार से अनुदान की तरी-साग दोनों का आनंद उठाते हैं। मंगल सबको साग-तरी परोसता है। उसने सोचा यह सब मुझे भी मिलेगा। उसे भी दूसरे कार्यकर्ता तरी वाली साग परोसने आएंगे। जैसे मतदाता पांच साल में एक बार मतदान करने जाता है तो उसे लगता है कि देश अब उसके मत से चलेगा। लेकिन परिणाम देखकर कुछ दिनों में उसका मत बदल जाता है। और देश की राजनीति अपने मद में चलने लगती है। सत्ता के हाथी की चाल में उसकी आवाज दब जाती है। कहां तो वह दबे-कुचलों की आवाज उठाने आया था और चुनाव बाद वह स्वयं दबा-कुचला-सा हो जाता है।

धीरे-धीरे वह तरी-साग की सच्चाई जानने लगता है। कौन तरी खा रहा है और किसके हिस्से साग आता है? और अंत में बड़ी जनसंख्या को सिर्फ साग के पतले पानी से ही संतुष्ट होना पड़ता है। जैसे उस दिन मंगल ने बहुत मेहनत की थी। भाग-भाग कर सबको भोजन कराया। आयोजन को सफल बनाने में निःस्वार्थ भाव से सेवा की। जैसे चुनावों के समय कुछ कार्यकर्ता निःस्वार्थ भाव से दल की सेवा करते हैं और चुनाव जीतने के बाद मेवा किसी और के हाथ लगता है। उसी तरह आखिर में मंगल जैसों की थाली में सिर्फ पतला तरीनुमा पानी रह जाता है। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

काव्यात्मक गद्य में लेखिका के मनोभाव

वर्तमान हिंदी कविता परिदृश्य में नीलेश रघुवंशी एक प्रतिष्ठित नाम हैं। कविता से इतर उनके द्वारा रचित दो उपन्यासों को भी बहुत पसंद किया गया है। अब हाल में प्रकाशित होकर आई पुस्तक 'गद्य का पानी' में उनके काव्यात्मक गद्य की रवानगी देखते ही बनती है। यह किसी एक विधा की सीमाओं में बंधी किताब नहीं है। यहां कई विधाओं का ऐसा मनोरम कोलाज नजर आता है, जो हमें लेखिका के भावजगत में उतरने, उनकी रचनात्मकता को बिल्कुल करीब से महसूसने और उनकी महीन संवेदनाओं को स्पर्श करने का रास्ता मुहैया कराता है। चार खंडों में बंटी इस किताब में नीलेश अपने अतीत से लेकर वर्तमान में आवाजाही करती नजर आती हैं। 'मन की चिट्ठी' खंड में वे मन, जीवन और समाज के विभिन्न तलों में उतरकर सृजन के रहस्य तलाशती हैं तो 'गद्य का पानी' खंड में अपने कुछ प्रिय रचनाकारों के सृजन जगत से गुजरते हुए, उत्पन्न विचारों को भी संजोती चलती हैं। उनके कुछ संस्मरणों और यात्रा संस्मरणों को 'आवारगी' खंड में पढ़ सकते हैं। अंतिम खंड 'जनरल बोगी' में संकलित उनके कुछ वक्तव्य और टिप्पणियां, हमें रचनाकार की अबूझ-अनदेखी सी सृजन भूमि में झांकने का झरोखा उपलब्ध कराती हैं। कहना चाहिए कि यह पुस्तक, पाठक को कई विधाओं से तैयार किश्ती के जरिए लेखिका के काव्यात्मक गद्य के अप्रतिम प्रवाह का आनंद लेने का अवसर प्रदान करती है। *

पुस्तकः गद्य का पानी,
लेखिकाः नीलेश रघुवंशी,
मूल्यः 399 रुपए,
प्रकाशकः राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

{ सांस्कृतिक आयोजन / धीरज बसाक }

राजस्थान के बीकानेर में प्रत्येक वर्ष जनवरी के दूसरे सप्ताह में आयोजित होने वाला ऊंट महोत्सव, दुनिया भर में प्रसिद्ध है। 'रेगिस्तान का जहाज' कहे जाने वाले ऊंट के महत्व को दर्शाते और राजस्थान की लोक संस्कृति की झलक दिखाते इस महोत्सव की कुछ विशेषताओं के बारे में यहां बता रहे हैं।

लोक जीवन-संस्कृति की झलक दिखाता राजस्थान का बीकानेर ऊंट महोत्सव

बीते दो दिनों से राजस्थान के बीकानेर में चल रहे वार्षिक ऊंट महोत्सव-2026 का आज अंतिम दिन है। राजस्थान की मरुस्थलीय आत्मा, जब परंपरा-लोकजीवन और आधुनिक समय से संवाद करती है, तब बीकानेर ऊंट उत्सव जैसा अनूठा सांस्कृतिक महोत्सव जन्म लेता है। यह केवल पर्यटन आयोजन भर नहीं है बल्कि उस सभ्यता का उत्सव है, जिसने ऊंट को जीवन-सहचर बनाया है।

जीवंत संवाद रचता महोत्सव: मानव सभ्यता के विकास क्रम में शुरू से ही ऊंट बहुत महत्वपूर्ण रहे हैं। विशेष तौर पर राजस्थान के लोक जीवन की बात करें तो ऊंट, यहां के लोगों की यात्राओं, व्यापार, सुरक्षा और जीविका के हर मोड़ पर सहचर के रूप में मिलता है। ऊंटों की इसी प्रासंगिकता और उनकी सांस्कृतिक उपस्थिति को राजस्थान की विशिष्ट संस्कृति के रूप में देश और दुनिया के पर्यटकों के सामने प्रस्तुत करता है बीकानेर में हर साल आयोजित होने वाला यह ऊंट महोत्सव। यह उत्सव राजस्थान की परंपरा एवं संस्कृति को मंच देता है और वर्तमान से उसका जीवंत संवाद रचता है।

वर्तमान-अतीत की झलक: राजस्थान के थार इलाके में सदियों से ऊंट, जीवनरेखा का महत्वपूर्ण अंग रहा है। यात्रा, व्यापार, कृषि और रक्षा, हर क्षेत्र में उसकी भूमिका महत्वपूर्ण रही है। बीकानेर रियासत के दौर में ऊंटों की नस्ल सुधार, उनकी साज-सज्जा और प्रशिक्षण की एक विलक्षण परंपरा विकसित हुई, जिसने आगे चलकर ऊंट उत्सव की आधुनिक प्रस्तुति की रूपरेखा तय किया। यह उत्सव न सिर्फ लोकस्मृति और लोकसंस्कृति को मंच देता है बल्कि नई पीढ़ी को भी अपनी परंपरा से जोड़कर रखता है। उत्सव के दौरान सजे-धजे ऊंटों की भव्य परेड, ऊंट नृत्य, ऊंटों की सौंदर्य प्रतियोगिता और कौशल प्रदर्शन जैसी गतिविधियां मिलकर रेगिस्तान की सौंदर्य भाषा को अनंत विस्तार देते हैं। लोकसंगीत, कालबेलिया और घूमर की थाप पर जब ऊंट लयबद्ध ढंग से चलते हैं, तो लगता है समय ठहर गया है और दर्शक इतिहास के साथ वर्तमान को एक फ्रेम में देख रहे हैं।

हर गतिविधि करती है आकृष्ट: भव्य ऊंट शोभा परेड, ऊंट नृत्य, ऊंट करतब, ऊंट सौंदर्य प्रतियोगिता, ऊंट दौड़ और कौशल प्रदर्शन, लोकसंगीत, कालबेलिया और घूमर जैसे लोकनृत्य, शिल्प, खान-पान मेला और दीप प्रज्वलन की सांस्कृतिक संध्या, इस उत्सव के मुख्य आकर्षण होते हैं। ऊंट परेड में जहां सजे-धजे ऊंटों की भव्य रंग-बिरंगी कदमताल देखने को मिलती है, वहीं ऊंट नृत्य कार्यक्रम के तहत प्रशिक्षित ऊंट, लोक धुनों पर लयबद्ध होकर थिरकते हैं। अपनी तरह के अनोखे आयोजन ऊंट सौंदर्य प्रतियोगिता के तहत ऊंटों की कद-काठी, साज-सज्जा और चाल-ढाल के आधार पर किसी एक सर्वश्रेष्ठ ऊंट को विजेता चुना जाता है। ऊंट दौड़ के कौशल प्रदर्शन में मरुस्थलीय मैदानों में गति और नियंत्रण का प्रदर्शन करते हुए ऊंट दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देते हैं। ढोलक, खड़ताल और अलगोजा की धुनों पर नृत्य करतीं राजस्थानी महिला नृत्यांगनाएं, कालबेलिया और घूमर जैसे लोक नृत्यों पर राजस्थान की लोक-संस्कृति का उत्सव प्रस्तुत करती हैं। इस महोत्सव में ऊंट के ऊनी उत्पाद, कशीदाकारी, मिट्टी के शिल्प जैसे प्रसिद्ध राजस्थानी शिल्प का उत्सव भी सजता है। खान-पान की बात करें, तो इस उत्सव में बीकानेरी भुजिया, रसगुल्ला तथा घेवर जैसे पारंपरिक व्यंजनों का पर्यटक बड़े चाव से स्वाद लेते हैं।

कई रूपों में है महत्वपूर्ण: बीकानेर ऊंट उत्सव, राजस्थान और देश के सांस्कृतिक उन्नयन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। इससे देश की भव्य विरासत का संरक्षण भी संभव होता है। इससे ऊंट पालन, पारंपरिक साज-सज्जा और लोककला का दस्तावेजीकरण व मंचन होता है। इससे विलुप्त होती परंपराओं को नया जीवन मिलता है। देश-विदेश से आने वाले पर्यटक राजस्थान की लिविंग कल्चर देखते हैं, जिससे भारत की सॉफ्ट पावर को बल मिलता है। इस महोत्सव में युवाओं की भागीदारी, उन्हें आधुनिकता और परंपरा से परिचय कराता है। इन सब वजहों से ऊंट उत्सव एक अनूठा उत्सव बन जाता है।

ऊंट उत्सव के प्रमुख आकर्षण: अगर आप इस उत्सव में शामिल होने जा रहे हैं तो सुबह की परेड और शाम को होने वाले सांस्कृतिक आयोजन में हिस्सा लेने से न चूकें। इस उत्सव में आपको स्थानीयता का भरपूर रस मिलेगा, जो इस उत्सव की विशेष खूबी है। उत्सव में लोक संस्कृति, खान-पान और हस्तशिल्प का सौंदर्य देखने को तो मिलता ही है। इस उत्सव में अगर शामिल होने के लिए आप आ रहे हैं तो आस-पास के अन्य ऐतिहासिक दर्शनीय स्थलों की यात्रा करने का अवसर भी मिल जाता है। कुल मिलाकर बीकानेर का ऊंट उत्सव एक ऐसा उत्सव है, जिससे रंगीले राजस्थान की धज बनती है। *

तन-मन में करे ऊर्जा का संचार

सांस्कृतिक पर्व मकर संक्रांति

मकर संक्रांति पर्व की धार्मिक, सांस्कृतिक महत्ता तो है ही, इसके स्वास्थ्य संबंधी कई पहलू भी बहुत महत्वपूर्ण हैं। यहां जानिए, इस पर्व से जुड़ी उन परंपराओं के बारे में, जो शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य को बेहतरी प्रदान करते हैं।

{ पर्व-महात्म्य / डॉ. मोनिका शर्मा }

मकर संक्रांति केवल एक धार्मिक, सांस्कृतिक या पारंपरिक त्योहार भर नहीं है। यह सामाजिक समरसता, मेल-जोल और मदद के उन मानवीय भावों से जुड़ा उत्सव है, जिनकी आज के बिखरते भरोसे के परिवेश में बहुत अधिक दरकार है। अहम बात यह भी है कि यह उत्सव सेहत बनाने और संवारने का पाठ भी पढ़ाता है। बीते कुछ बरसों में रोग प्रतिरोधक क्षमता अच्छी होने की महत्ता को हमने अच्छे से समझ लिया है। परंपरागत खान-पान और संतुलित जीवनशैली का महत्व भी अब और गहराई से समझ आया है। ऐसे में मकर संक्रांति जैसे पर्व से जुड़ी हमारी मान्यताएं और क्रिया-कलाप स्वास्थ्य सहेजने वाली हैं।

सधी दिनचर्या की अहमियत: यह त्योहार ना केवल हमारे रहन-सहन, खान-पान और दिनचर्या में बदलाव लेकर आता है बल्कि सेहत के लिए भी कई संदेश लिए है। गुनगुनी धूप वाले इस मौसम में हमारी दिनचर्या ही बदल जाती है। यह पर्व, प्रकृति के जरिए स्वास्थ्य को सहेजने की सीख देता है। मकर संक्रांति पर सूर्य के उत्तर दिशा में जाने से दिन बड़े होने लगते हैं और इसी के साथ वसंत ऋतु का भी आगमन होता है। मकर संक्रांति से प्रकृति भी करवट बदलती है। जो सर्दियों के बाद ऊर्जा से भरी दिनचर्या की ओर लौटने का समय होता है। ऊर्जा और उजास का यह पर्व, प्रकृति के बदलाव संग सामंजस्य बनाए हुए अनुशासित जीवन जीने की सीख देता है। आज वैज्ञानिक अध्ययन और चिकित्सकों की सलाह भी मन और तन दोनों को सहेजने के लिए सधी दिनचर्या को सबसे जरूरी बताते हैं।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए जरूरी धूप: इस पर्व पर पतंग उड़ाने की परंपरा है। यह केवल मनोरंजन भर नहीं है। पतंग उड़ाने की यह रीत सेहत से भी जुड़ी है। मौजूदा जीवनशैली में कई व्याधियां तो केवल धूप की कमी के कारण ही जड़ें जमा रही हैं। ऐसे में खुले आसमान तले छत पर पतंग उड़ाना और सूर्य की किरणों का सीधे हमारे शरीर के संपर्क में आना भी सेहत के लिए बहुत फायदेमंद है। अब तो वैज्ञानिक भी इस बात की पुष्टि कर चुके हैं कि धूप में बैठने से शरीर को विटामिन-डी मिलता है। कई तरह के कीटाणु खत्म होते हैं और मन भी अवसाद से दूर रहता है। नींद अच्छी आती है। ब्लड सर्कुलेशन अच्छा होता है। जिससे शरीर में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ती है। रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। यह प्राकृतिक उजास समग्र जीवन को संवारती है। मनोभावों में संतुलन लाती है। अवसाद और थकान को दूर कर ऊर्जावान जीवनचर्या से जोड़ती है।

बेहतर होती है मानसिक सेहत: सर्दियों का मौसम एक ठहराव लाता है, जिसमें मन अनमना सा रहता है। संक्रांति पर्व से मौसम का बदलाव और खिली धूप की रंगत मन को सुकून देती है। यही वजह है कि यह पर्व मन की सेहत को बेहतर बनाने वाला भी है। यह प्रकृति का आभार जताने का पर्व भी है। साथ ही सूर्य की उपासना का यह पर्व, यह भी सिखाता है कि हम देना सीखें। क्योंकि सूर्य अपना प्रकाश, ऊर्जा और रोशनी की सौगात पूरे संसार को बिना किसी भेदभाव के बांटता है। माना जाता है कि सूर्य का उत्तर दिशा में होना भी आध्यात्मिक रूप से काफी महत्व रखता है। उत्तरायण में सूर्य के होने से व्यक्ति में नई ऊर्जा का संचार होता है। इस समय खिली धूप से मन को सकारात्मकता की उजास मिलती है। सूरज की किरणें पड़ने पर अच्छा महसूस कराने वाले हार्मोन, सेरेटॉनिन और एंडोर्फिन का स्राव बढ़ता है, जिससे हमारे मन को खुशनुमा अहसास की सौगात मिलती है।

त्योहारी आहार से बढ़े इम्यूनिटी: देश भर में लोग मकर संक्रांति के त्योहार पर तिल, मूंगफली, गुड़, चावल और उड़द की दाल जैसे आहार का सेवन करते हैं। इन सभी चीजों में सबसे ज्यादा महत्व तिल को दिया जाता है, जो शरीर को निरोग रखता है। मकर संक्रांति के पर्व पर जिन चीजों को खाने में शामिल किया जाता है, वे पौष्टिक होने के साथ ही साथ शरीर को ऊर्जा देने वाले भी होते हैं। इस पर्व पर खाई जाने वाली लगभग सभी चीजें रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाली हैं। समझना मुश्किल नहीं कि सांस्कृतिक विरासत ही नहीं सेहतमंद रहने के मोर्चे पर भी यह त्योहार बहुत महत्वपूर्ण है। आध्यात्मिक ही नहीं वैज्ञानिक आधार भी लिए है। समझना जरूरी है कि बिखरते मन-जीवन के इस दौर में तो सामाजिक और वैज्ञानिक चेतना जगाने वाले ऐसे पर्वों की सार्थकता और बढ़ गई है। *

{ सजेशन / नरेंद्र कुमार }

डिजिटल टेक्नोलॉजी में माहिर होना, आज कामयाबी की सबसे जरूरी मेरिट बन गई है। आज हर जगह जिस योग्यता की सबसे ज्यादा डिमांड है, वह डिजिटल टेक्नोलॉजी ही है। इस बारे में आपको पता होना चाहिए।

प्रोफेशनल सक्सेस के लिए जरूरी है डिजिटल स्मार्टनेस

आज के दौर में प्रोफेशनल सक्सेस सिर्फ डिग्री, अनुभव या पुराने सर्टिफिकेट पर निर्भर नहीं करती है। वास्तव में प्रोफेशनल सक्सेस की परिभाषा अब बिल्कुल बदल चुकी है। कंपनियों से लेकर स्टार्टअप तक हर जगह अब जिस एक चीज की योग्यता सबसे ज्यादा समझी जाती है, वह है डिजिटल स्मार्टनेस। इसलिए डिजिटल टेक्नोलॉजी में एक्सपर्ट होना जरूरी है।

आज के दौर की जरूरत: पिछले एक दशक से प्रोफेशनल वर्ल्ड में जितना तेज बदलाव हुआ है, पिछले 50 सालों में उतना बदलाव किसी क्षेत्र में नहीं हुआ। एआई आटोमेशन, रिमोट वर्क, एप इकोनॉमी ने लगभग हर सेक्टर की कार्यशैली को एक नई दिशा दी है। दरअसल, अब लगभग सभी सेक्टर्स में पेपर वर्क बहुत कम होता है। अधिकांश काम डिजिटल स्क्रीन पर ही होते हैं, इसलिए हर सेक्टर का वर्किंग सेंटर डाटा बन चुका है। मीटिंग्स अब ऑफिस में आमन-सामने बैठकर कम, ऑनलाइन ज्यादा होती हैं। इसलिए टेक एक्सपर्ट एंप्लॉइज ही कंपनी की पहली पसंद बन गए हैं। ऐसे में अगर अपने करियर में निरंतर आगे बढ़ना है तो डिजिटल स्किल में दक्षता हासिल करिए, यही एकमात्र आगे बढ़ने का जरिया है। आपके पास एकेडमिक कोई भी डिग्री हो, अगर आपमें डिजिटल स्किल नहीं है तो याद रखिए कि आसानी से नौकरी नहीं मिलने वाली। अगर मिल भी गई तो आप अपने करियर में बहुत आगे तक ग्रो नहीं कर पाएंगे।

हर सेक्टर के लिए है जरूरी: प्रोफेशनल करियर कोई भी हो, लेकिन आज हर सेक्टर के लिए डिजिटल टेक्नोलॉजी जरूरी हो चुकी है। फिर चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो, स्वास्थ्य का क्षेत्र हो, कृषि क्षेत्र हो, बैंकिंग हो, पत्रकारिता हो, कानून हो, बिजनेस या इंजीनियरिंग हो, हर क्षेत्र डिजिटल टेक्नोलॉजी से ही संचालित होता है। इसलिए आज किसी भी करियर के लिए ये क्षमताएं जरूरी हैं। जानकारी खोजने की डिजिटल क्षमता, ई-मेल हैंडलिंग, ऑनलाइन कम्युनिकेशन, सोशल मीडिया मैनेजमेंट, एआई टूल्स का उपयोग, एक्सेल पावर, वीआई जैसे डाटा टूल्स, टीम वर्क के लिए जूम, स्लैक, टीम्स जैसे प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल, सोशल मीडिया और डिजिटल ब्रांडिंग जैसी स्किल्स जो व्यक्ति अपने करियर में नहीं अपनाता या अपनाने की क्षमता नहीं रखता, तो समझिए वो मॉडर्न जॉब मार्केट से आउटडेटेड हो जाएगा।

एआई को बनाएं अपना कुलीग: बीते कुछ वर्षों में एआई, हर प्रोफेशनल सेक्टर में हमारा कुलीग बनने के दौर में प्रवेश कर चुका है। एआई अब सिर्फ मशीन टूल नहीं, कई कामों में मददगार बन चुका है। एआई अब प्रोफेशनली आगे बढ़ने में बहुत हेल्पफुल हो सकता है। यह ऐसे तरीकों से आपकी मदद कर सकता है, जिसके बारे में पहले कभी सोचा भी नहीं गया था। प्रेजेंटेशंस को तैयार करना, प्रोजेक्ट की प्लानिंग करना, कोड-ऑटोमेशन, इंटरव्यू की तैयारी और नए स्किल्स सीखने में यह बहुत हेल्पफुल साबित हो रहा है। आज एआई के उपयोग करने वाले प्रोफेशनल रूटीन वर्क को दूसरे लोगों के मुकाबले 40 से 50 फीसदी कम समय में कर लेते हैं। जाहिर है, दूसरों से ज्यादा प्रोफेशनल ग्रोथ कर पाते हैं। इसलिए अपने करियर में मनचाही कामयाबी चाहते हैं, लेकिन अभी तक डिजिटल टेक्नोलॉजी में दक्ष नहीं हैं तो बिना देर किए सबसे पहले इसमें दक्षता हासिल कर लें।

हर सेक्टर के लिए अलग डिजिटल टूल: आज कंपनियां अपने लिए एंप्लॉइज रिक्रूट करते समय यह नहीं पूछतीं कि आप कंप्यूटर जानते हैं या नहीं बल्कि पूछते हैं, आप कौन-सा डिजिटल टूल कितनी दक्षता से इस्तेमाल कर सकते हैं? क्योंकि आज कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है, जिसके लिए कोई विशेष डिजिटल स्किल न मौजूद हो। जरा इन कुछ डिजिटल तकनीकों पर नजर दौड़ाइए और फिर सोचिए इनमें से किस टूल में दक्ष होना आपके प्रोफेशनल ग्रोथ के लिए जरूरी है। जैसे-डाटा एनालिटिक्स, साइबर सिक्यूरिटी बेसिक्स, सोशल मीडिया मैनेजमेंट, ऑटोमेशन टूल्स, एक्सेल एडवांस, ग्राफिक-वीडियो टूल, सीआरएम/ईआरपी सॉफ्टवेयर, एआई सपोर्ट, वर्क फ्लो आदि। इन सारे के सारे टूल्स को ऑपरेट करना अब प्रोफेशनल मेरिट लिस्ट का आधार बन चुका है और करीब-करीब हर क्षेत्र की जॉब का हिस्सा बन चुका है।

पावरफुल है डिजिटल नेटवर्किंग: अब नॉर्मल रेज्यूमे से कहीं ज्यादा लिंक्डइन जैसे प्लेटफॉर्म शक्तिशाली साबित हो रहे हैं। यहां की आपकी तस्वीर, प्रोफाइल, पोस्ट, कमेंट, बातचीत, सब आपकी डिजिटल पहचान बनाते हैं। डिजिटल नेटवर्किंग के बहुत फायदे हैं। इससे अच्छे प्रोफेशनल अवसरों तक सीधे पहुंच बनती है। इंडस्ट्री लीडर से सीधा संवाद होता है। कई तरह की नौकरियों का पता चलता है। किसी खास प्रोजेक्ट और फ्रीलांस काम करने का भी अवसर मिलता है। इसके जरिए हर प्रोफेशनल अपने आप में सेल्फ ब्रांड बन सकता है, यह कंसेप्ट भी डिजिटल मीडिया से ही आया है। आज 50 प्रतिशत से ज्यादा कॉर्पोरेट जॉब्स डिजिटल रेफरल या नेटवर्क से मिल रही हैं और यह आंकड़ा यहां रुका नहीं है, लगातार ऊपर की ओर बढ़ रहा है। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि क्यों डिजिटल टेक्नोलॉजी में दक्षता आज की सबसे बड़ी जरूरत बन गई है।

ई-लर्निंग के खुले रास्ते: आज सफल करियर का मंत्र है, 'जो सीखना बंद कर देता है, वह आगे बढ़ना भी बंद कर देता है।' डिजिटल टेक्नोलॉजी की सबसे बड़ी देन है, ऑनलाइन सीखने की असीमित आजादी। कोरसेरा, उडेमी, एनबीटीएल, गूगल सर्टिफिकेट्स, यू-ट्यूब पर उपलब्ध कोर्सेस, आज ऐसे अनेक प्लेटफॉर्म है, जहां जबर्दस्त असीमित ज्ञान है। लेकिन अगर आप डिजिटल टेक्नोलॉजी से अंजान हैं, तो यह सारा ज्ञान आप नहीं पा सकते हैं। इसलिए आपका रेग्युलर डिजिटल नॉलेज से खुद को अपडेट करते रहना जरूरी है। *

{ सिने ट्रेंड / हेमंत पाल }

हिंदी फिल्म निर्माण के आरंभिक दौर से ही साहित्यिक कृतियों पर आधारित फिल्में बनती रही हैं। हालांकि इन फिल्मों की सफलता का प्रतिशत कम ही रहा है। इसकी प्रमुख वजहों के साथ यहां कुछ ऐसी फिल्मों पर भी नजर डाल रहे हैं, जो साहित्यिक कृतियों पर आधारित रहीं।

साहित्यिक कृतियों पर बनी फिल्में कम हुईं सफल-अधिकांश रहीं असफल

किसी भी साहित्यिक कृति पर आधारित फिल्म बनाने के लिए फिल्म के निर्माता-निर्देशक और स्क्रिप्ट राइटर का उस साहित्यिक कृति के मूल भाव को समझना पहली शर्त होती है। कथाकार की भावना को समझना, उसमें मनोरंजन का पक्ष ढूंढ़ना और सबसे बड़ी बात, यह पता लगाना कि जब यह पर्दे पर आएगी तो इसे दर्शक स्वीकारेंगे या नहीं, इन बातों को जानना-समझना बहुत जरूरी है।

शुरुआत से बन रहीं साहित्यिक फिल्में: साहित्य और सिनेमा दोनों ही अलग विधाएं हैं। लेकिन फिल्म निर्माण के आरंभिक दौर से ही साहित्यिक कृतियों पर आधारित फिल्में बनती रही हैं। हां, इस तरह की साहित्य-आधारित फिल्में संख्या की दृष्टि से कम जरूर बनी हैं। हिंदी की पहली फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र' भी भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाटक 'राजा हरिश्चंद्र' पर आधारित थी। बाद में प्रेमचंद की कई कालजयी कृतियों पर फिल्में बनाई गईं। कुछ फिल्में चलीं, तो कुछ को दर्शकों ने नकार दिया। साहित्यिक कृतियों पर फिल्में बनाने के अब तक कई प्रयोग हुए, पर ज्यादातर को सफलता नहीं मिली! जितना किसी साहित्यिक कृति को पसंद किया गया, उस पर बनी फिल्में उतनी सफल नहीं रहीं।

प्रभाव छोड़ने में असफल रही 'मोहल्ला अस्सी'

कमलेश्वर के उपन्यास पर आधारित फिल्म 'आंधी'

साहित्यिक कृति पर आधारित यादगार फिल्में: बॉलीवुड में साहित्यिक रचनाओं पर आधारित कुछ फिल्मों की बात करें तो प्रेमचंद के उपन्यास 'गोदान' पर इसी नाम से बनी फिल्म, फणीश्वर नाथ रेणु की कहानी पर बनी 'तीसरी कसम', महाश्वेता देवी की कहानी पर बनी 'रुदाली', विमल मित्र के उपन्यास पर बनी 'साहब, बीवी और गुलाम', रवींद्र नाथ टैगोर की कहानी 'नष्टनीड़' पर सत्यजीत रे की फिल्म 'चारुलता', ये कुछ यादगार फिल्में हैं। भगवतीचरण वर्मा के उपन्यास 'चित्रलेखा' पर केदार शर्मा ने फिल्म बनाई, जो सफल भी रही। कमलेश्वर की कृतियों पर आधारित गुलजार द्वारा बनाई गई फिल्में 'आंधी' और 'मौसम' की गिनती भी साहित्य पर आधारित बेहतरीन फिल्मों में होती है। बांग्ला फिल्मकार बासु चटर्जी ने राजेंद्र यादव के उपन्यास पर आधारित 'सारा आकाश' और मन्नू भंडारी की कहानी 'यही सच है' पर आधारित 'रजनीगंधा' जैसी प्रशंसनीय फिल्में बनाईं। शरतचंद्र के उपन्यासों पर भी फिल्में बनीं, जिनमें 'देवदास' भी शामिल है।

'रेणु' की कहानी पर बनी 'तीसरी कसम'

नहीं चलीं साहित्य पर आधारित ये फिल्में: साहित्य पर आधारित कई ऐसी फिल्में बनीं, जिसे आशानुकूल सफलता नहीं मिली। चंद्रधर शर्मा गुलेरी की कहानी 'उसने कहा था' पर भी फिल्म बनी। आचार्य चतुरसेन शास्त्री के उपन्यास 'धर्मपुत्र' पर बीर.आर. चोपड़ा ने फिल्म बनाई। कहानीकार राजेंद्र सिंह बेदी की कृति 'एक चादर मैली सी' पर भी फिल्म बनी, पर वह भी अपेक्षा के अनुसार नहीं चली। इन फिल्मों के असफल होने का एक कारण संभवतः यह भी था कि फिल्मकार और कलाकार लेखक के मर्म को पकड़कर उसे पर्दे पर ठीक से उतार नहीं पाए! हाल के वर्षों में कथाकार काशीनाथ सिंह की मशहूर कृति 'काशी का अस्सी' पर चंद्र प्रकाश द्विवेदी ने फिल्म 'मोहल्ला अस्सी' बनाई, पर यह फिल्म भी दर्शकों की कसौटी पर खरी नहीं उतरी। अपने संवादों को लेकर फिल्म विवादों में फंसी सो अलग।

मन्नू भंडारी की कहानी पर बेस्ड 'रजनीगंधा'

साहित्य और सिनेमा में होता है अंतर: साहित्य किसी दृश्य या घटना की जो व्याख्या या विश्लेषण करता है, हर पाठक के पास वही पहुंचता है। पाठकों के स्तर में अंतर के आधार पर उसका प्रभाव भी अलग-अलग होता है। जबकि सिनेमा, दृश्य माध्यम होता हैं। उसके पास व्याख्या और विश्लेषण की सुविधा बहुत कम होती है। साहित्य में जो व्याख्या उसके प्रभाव को बढ़ा देती है, उसी व्याख्या की कोशिश सिनेमा के असर को कमजोर कर देती है। जो विवरण साहित्य की ताकत होता है, वही सिनेमा की कमजोरी बनकर सामने आता है। साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि पाठक इसे पढ़ते हुए अपनी कल्पनाशक्ति से दृश्यचित्र बनाता है। जबकि सिनेमा में दर्शक को डायरेक्टर की कल्पनाशक्ति देखनी पड़ती है।

होती हैं व्यावसायिक बाध्यताएं: हर फिल्म के पीछे व्यावसायिक दबाव भी काम करता है। ये दबाव भी होता है कि मनोरंजन के बीच साहित्यकार की सोच, उसकी कृति के साथ भी पूरा इंसाफ हो। साहित्यकार अपनी कल्पना शक्ति से पाठकों को जिस कहानी से रूबरू करवाता है, फिल्मकार उसे उतनी ईमानदारी से पर्दे पर उतार भी पाता है या नहीं, ये भी ध्यान रखने वाली बात है। एक ही कहानी को अलग-अलग पाठक अपने मानस में अलग प्रभाव के साथ लेते हैं। जबकि फिल्मकार को उसे हर दर्शक के नजरिए से सजाना पड़ता है। इन्हीं कारणों से अधिकांश मशहूर साहित्यिक कृतियों के फिल्मी प्रयोग खास सफल नहीं हो पाए। इसे हिंदी फिल्मों का दुर्भाग्य ही माना जाना चाहिए कि फिल्मकारों और फिल्म से जुड़े अधिकांश लोगों का साहित्य से कोई सरोकार नहीं रहा, जबकि अन्य क्षेत्रीय और विदेशी भाषाओं में बनी कई फिल्में, साहित्यिक कृतियों से जुड़ी रहीं। हम उम्मीद कर सकते हैं आने वाले समय में शायद फिल्मकारों की नजर अच्छी कहानियों पर पड़े, वे उन्हें पर्दे पर सफलतापूर्वक उतार सकें और इस तरह की फिल्में सफल भी हों। *